॥ श्री ॥

# शत्रुंजय तिर्थमाला, रास अने उधारादिकनो संग्रह.

प्रकाशक,

श्रावक जीमसिंह माणेक.

जैन पुस्तक वेचनार तथा प्रसिद्ध करनार

शाकगली मांडवी, मुंबई.

धी न्यु लक्ष्मी प्रेस, शाकगली मांडवी, मुंबई ३.

Jain Education International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

# शत्रुंजय तीर्थमाला, रास, अने उद्धारादिकनो संग्रह

आ पुस्तक
समस्त जैन भाइओने कार्तिक तथा चैत्री
पूर्णिमादिक दिवसोमां तथा श्री शत्रुंजय
यात्रा जती वखत अवश्य पासें
राखवा योग्य जाणी
तेनी तृतीयावृत्तिमां
यथामति संशोधन करीने

प्रसिद्ध करनार,
श्रावक जीमसिंह माणेक.
जैन पुस्तक वेचनार तथा प्रसिद्ध करनार.
शाकगली, मांडवी मुंबई ३.

संवत १९७९ चैत्री पुनम. सने १९२३.

धी न्यु लक्ष्मी प्रस शाकगली, मांडवी मुंबई ३.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

## ॥ एतत्पुस्तकगतग्रंथानुक्रमणिका ॥


| अंग. | ग्रंथनां नाम. | पृष्ठ. |
|---|---|---|
| १ | श्रीसिद्धाचलजीनो उद्धार नयसुंदरजीकृत. | १ |
| २ | श्रीसिद्धगिरिस्तुतिना दोहा. १०ए | १८ |
| ३ | आदिनाथ विनंतिरूप शत्रुंजयनुं महोटुंस्त० | २८ |
| ४ | श्री शत्रुंजय तीर्थमाला अमृतविजयजी कृत | ३० |
| ५ | श्री वीरविजयजीविरचित शत्रुंजयनां एकवीश खमासमण संबंधी उंगणचालीश दोहा. | ५७ |
| ६ | विमलकेवल ज्ञान कमला चैत्यवंदन. | ६१ |
| ७ | सिद्धाचल शिखरें चढो, चैत्यवंदन. | ६२ |
| ८ | वीरजी आया रे विमलाचलके मेदान, स्तवन. | ६३ |
| ए | शत्रुंजय मंमण ऋषन्नजिणंद दयाल, थोय, | ६५ |
| १० | श्रीशत्रुंजयगिरि तीरथ सार, थोय. | ६६ |
| ११ | श्री शत्रुंजयनां एकवीश नाम हेतुसहित. | ६७ |
| १२ | श्री शत्रुंजयनो रास, समयसुंदरजी कृत. | ७१ |
| १३ | शेत्रुंजो जोवानुं हो जोर छे जी राज स्तवन. | ८५ |
| १४ | शाश्वतजिन चैत्योनां स्थानको. | ८६ |
| १५ | चोवीश जिनना १२० कल्याणिकना दिवस. | ए३ |
| १६ | दादा मोरा सासरीये वलाव्य. | ए८ |
| १७ | नाजिराया वंशे गारु उदयो दिणंद. | एए |


Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ अथ ॥

# ॥ श्री नयसुंदरजीकृत सिद्धाचलजीनो उद्धार प्रारंभः ॥

॥ विमलगिरिवर विमलगिरिवर, मंमणो जिनरा य ॥ श्री रिसहेसर पाय नमि, धरिय ध्यान शारदा देवि य ॥ श्री सिद्धाचल गायशुं ए, हीये नाव निर्मल धरेवि य ॥ श्री शत्रुंजगिरितीरथ वमो, सिद्ध अनंती कोमी ॥ जिहां मुनिवर मुक्तें गया, ते वंदुं बे कर जोमी ॥ १ ॥ ॥ ढाल पहेली ॥ आदनराय पुहतला ए ॥ ए देशी ॥

॥ बे कर जोमीने जिन पाय लागुं, सरसती पासें वचन रस मागुं ॥ श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार, थुणवा उलट थयो रे अपार ॥ २ ॥ तीरथ नहिं कोइ शत्रुंजय तोलें, अनंत तीर्थंकर इणी परें बोले ॥ गुरुमुख शास्त्रनो लहिय विचार, वर्णवुं शत्रुंजा तीर्थ उद्धार ॥ ३ ॥ सुरवरमांहे वमो जेम इंद्र, ग्रहगणमांहे वमो जेम चंद्र ॥ मंत्रमांहे जेम श्रीनवकार, जलदायक जेम जग जलधार ॥ ४ ॥ धर्ममांहे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दयाधर्म वखाणुं, व्रतमांहे जेम ब्रह्मव्रत जाणुं ॥ पर्वतमांहे वमो मेरू होइ, तिम शत्रुंजय सम तीर्थ न कोइ ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ त्रण्य पल्योपम ए ॥ देशी ॥

॥ आगें ए आदिजिनेसर, नाभि नरिंद मलार ॥ शत्रुंजय शिखर समोसरया, पूरव नवाणुं ए वार ॥ ६ ॥ केवलज्ञान दिवाकर, स्वामी श्री रुषन्न जिणंद ॥ साथें चोराशी गणधर, सहस्स चोराशी मुणिंद ॥ ७ ॥ बहु परिवारें परवरया, श्री शत्रुंजय एक वार ॥ रुषन्न जिणंद समोसरया, महिमा न लाडुं ए पार ॥८॥ सुर नर कोमी मल्या तिहां, धर्म देशना जिन भाषे ॥ पुंमरिक गणधर आगलें, शत्रुंजय महिमा प्रकाशे ॥९॥ सांभलो पुंमरिक गणधर, काल अनादि अनंत ॥ ए तीरथ छे शाश्वतुं, आगें असंख्य अरिहंत ॥ १० ॥ गणधर मुनिवर केवल, पाम्या अनंती ए कोमि ॥ मुक्तें गया इण तीरथ वली, जाशे कर्म विछोमि ॥ ११ ॥ क्रूर जिके जग जीवमा, तिर्यच पंखी कहीजें ॥ ए तीरथ सेव्याथकी, ते लीजे भव त्रीजे ॥ १२ ॥ दी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ल्रो दुर्गति वारे ए, सारे वांछितकाज ॥ सेव्यो ए श
त्रुंजय गिरिवर, आपे अविचल राज ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ राग धन्याश्री ॥ सहीय समाणी
आवो वेगें ॥ ए देशी ॥

॥ उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी आरो, बिहुं मलीने बार जी ॥ वीश कोमाकोमी सागर तेहनुं, मान कह्युं निरधार जी ॥ १४ ॥ पहेलो आरो सूसम सुसमा, सागर कोमाकोमी चार जी ॥ त्यारें ए श्री शत्रुंजय गिरिवर, एंशी जोयण अवधार जी ॥ १५ ॥ त्रण्य कोमाकोमी सागर आरो, बीजो सूसमनाम जी ॥ त दा कालें श्री सिद्धाचल, सीत्तर जोयण अभिराम जी ॥ १६ ॥ त्रीजो सूसम दूसम आरो, सागर को माकोमी दोय जी ॥ शाठ जोयणनुं मान शत्रुंजय, त काल दातुं जोय जी ॥ १७ ॥ चोथो दुसम सूसम जाणो, पांचमो दूसम आरो जी ॥ छठो दूसम दूसम कहिजें, ए त्रण्य थइय विचारो जी ॥ १८ ॥ एक को माकोमी सागर केरुं, एहनुं कहियें मान जी ॥ चोथे आरे श्री शत्रुंजय गिरि, पचास जोयण परधान जी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १९ ॥ पांचमे ठठे एकवीश एकवीश, सहस्स वरस वखाणो जी ॥ बार जोयण ने सात हाथनो, तदा वि मलगिरजाणोजी ॥ २० ॥ तेह जणी सदा काल एती रथ, शाश्वतुं जिनवर बोले जी ॥ रुषजदेव कहे पुंरुरिक निसुणो, नहिं कोइ शत्रुंजय तोले जी ॥ २१ ॥ ज्ञान अने निर्वाण महाजस, लेहेशो तुमे इण ठमें जी ॥ एह गिरितीरथ महिमा इण जगें, प्रगट हो शे तुम नामें जी ॥ २२ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ जिनवरशुं मेरो मन लीनो ए ॥ ए देशी ॥

॥ सांजली जिनवर मुखथी सारुं, पुंरुरिक गण धार रे ॥ पंचकोमी मुनिवरशुं इणगिरि, अणसण की ध उदार रे ॥ २३ ॥ नमो रे नमो श्री शत्रंजय गिरि वर, सकल तीर्थमांहे सार रे ॥ दीठो दुर्गति दूर निवारे, जतारे जवपार रे ॥ २४ ॥ नमो० ॥ केवल लही चैत्री पूनम दिन; पाम्या मुक्ति सुठाम रे ॥ तदा कालथी पुहवी प्रगटीयुं, पुंरुरिक गिरिनाम रे ॥२५॥ ॥ नमो० ॥ नयरी अयोध्याथी विहरता पहोता, ता

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तजी ऋषभ जिणंद रे ॥ शाठ सहस्स लगें षट्खंम साधी, आव्या भरत नरिंद रे ॥२६॥ नमो०॥ घरे जइ मायने पाय लाग्या, जननी दीये आशीषरे ॥ विमला चल संघाधिप केरी, पहोंचजो पुत्र जगीश रे ॥ २७ ॥ ॥ नमो० ॥ भरत विमासे साठ सहस्स सम, साध्या देश अनेक रे ॥ हवे हुं तात प्रत्यें जइ पूबुं, संघपति तिलक विवेक रे ॥ २८ ॥ नमो० ॥ समवसरणे पहोता भरतेसर, वंदी प्रभुना पाय रे ॥ इंद्रादिक सुर नर बहु मलिया, देशना दे जिनराय रे ॥ २९ ॥ ॥ नमो० ॥ शत्रंजय संघाधिप यात्राफल, भांखे श्री भगवंत रे ॥ तव भरतेश्वर करे रे सजाइ, जाणी लाभ अनंत रे ॥ ३० ॥ नमो० ॥

ढाल पांचमी ॥ कनक कमल पगलां ठवे ए

ए देशी ॥ राग धन्याश्री मारूणी ॥

॥ नयरी अयोध्याथी संचरयाए, लेइ लेइ रुद्धि अशेष ॥ भरत नृप भावशुं ए ॥ शत्रंजय यात्रा रंग भरेंए, आवे आवे ऊलट अंग ॥भ०॥ ३१ । आवे आवे ऋषभनो पुत्र, विमलगिरि यात्राये ए ॥ लावे लावे चक्र

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वर्त्तीनी रुद्धि ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ मंगलिक मुकुट वर्द्धन घणा ए, बत्रीश सहस नरेश ॥ज०॥ ३० ॥ठम ठम वाजे ढंदशुं ए, लाख चोंराशी निशान ॥ ज० ॥ लाख चोराशी गज तुरी ए, तेहनां रत्ने जडित पलाण ॥ ज० ॥ ३३ ॥ लाख चोराशी रथ जला ए, वृषज धोरी सुकुमाल ॥ ज० ॥ चरणे झांझर सोना तणां ए, कोटे सोवन घूंघरमाल ॥ ज० ॥ ३४ ॥ (मोहन रूप दीसे जलां ए,सवाकोमी पुत्र जमाल ॥ज०॥) बत्रीस सहस नाटक सही ए, त्रण लाख मंत्री दक्ष ॥ ज० ॥ दीवीधरा पंच लख कह्या ए, शोल सहस सेवा करे यक्ष ॥ज० ॥ ३५ ॥ दश कोमी अलंबध्वजा धरा ए, पायक ठत्रुं कोमी ॥ ज० ॥ चोशठ सहस अंते उरी ए, रूपे सरखी जोमी ॥ज० ॥ ३६ ॥ एक लाख सहस अठावीश ए, वारांगना रुपनी आलि ॥ ज०॥ शेष तुरंगम सवी मली ए, कोमी अढार निहालि ॥ज०॥ ॥ ३७ ॥ त्रण कोमी साथें व्यापारीया ए, बत्रीश कोमी सूआर ॥ज०॥ शेठ सार्थवाह सामटा ए, रायराणानो नहिं पार ॥ ज० ॥ ३८ ॥ नवनिधि चौद रयणशुं ए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लीधो लीधो सवि परिवार ॥ ज० ॥ संघपति तिलक सोहामणुं ए, जालें धराव्युं सार ॥ ज० ॥ ३ए ॥ पग पग कर्म निकंदता ए, आव्या आव्या आसन जाम ॥ ज० ॥ गिरि देखी लोचन ठख्यां ए, धन धन शत्रुंजय नाम ॥ ज० ॥ ४० ॥ सोवन फूल मुक्ताफलें ए, वधाव्या गिरिराज ॥ ज० ॥ दीये प्रदक्षिणा पाखती ए, सीधां सघलां काज ॥ ज० ॥ ४१ ॥

॥ ढाल छठी ॥ जयमालानी ॥ प्रभु पासनुं मुखडुं जोतां ॥ ए देशी ॥

॥ काज सीधां सकल हवे सार, गिरि दीठे हर्ष अपार ॥ ए गिरिवर दरिसण जेह, यात्रा पण कहियें तेह ॥ ४२ ॥ सूरज कुंम नदी शेत्रंजी, तीरथ जलें नाह्या रंजी ॥ रायण तलें रुषन जिणंद, पहेला प गलां पूजे नरिंद ॥ ४३ ॥ वली इंद्रवचन मन आ णी, श्रीरुषननुं तीरथ जाणी ॥ तव चक्री जरत न रेश, वार्द्धिकने दीधो आदेश ॥ ४४ ॥ तेणे शत्रंजा ऊपर चंग, सोवन प्रासाद उतुंग ॥ नीपायो अति मनो हार, एक कोश उंचो चउबार ॥४५॥ गाउ दोढ वि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स्तारे कहियें, सहस धनुष पहोलपणे लहियें ॥ ए केके बारणे जोइ, मंरुप एकवीशज होइ ॥४६॥ इम चिहुं दिशें चोराशी, मंरुप रचिया मुप्रकाशी ॥ तिहां रयणमय तोरणमाल, दीसे अति झाक झमाल ॥४७॥ विचें चिहुं दिशें मूल गंजारे, थापो जिनप्रति मा चारे ॥ मणिमय मूरति सुखकंद, थापी श्री आदि जिणंद ॥४८॥ गणधर वर पुंरुरीक केरी, थापी बीहुं पासें मूर्ति जलेरी ॥ आदिजिन मूरती काउस्सग्गि या, नमी वीनमी बे पासें ठवीया ॥४९॥ मणी सोवन रूप प्रकार, रची समवसरण सुवीचार ॥ चहुंदीशें चउ धर्म कहंत, थापी मूरती श्रीजगवंत ॥५०॥ जरतेसर जोमी हाथ, मूरती आगल जगनाथ ॥ रायण तलें जी मणे पासें, प्रजु पगलां थाप्यां उल्लासें ॥ ५१ ॥श्री नाजी अने मरूदेवी, प्रासादशुं मूर्त्ति करेवी ॥ गज वर खंधे लइ मुक्ती कीधी आईनी मूरति जक्ति ॥ ॥ ५२ ॥ सुनंदा सुमंगला माता, ब्राह्मी सुंदरी बहे न विख्याता ॥ वली जाइ नवाणुं प्रसिद्ध, सवि मूर ति मणमिय कीध ॥ ५३ ॥ नीपाई तीरथमाल, सु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रतीष्टा करावी वीशाल ॥ यक्ष गोमुख चक्केसरी देवी, तीरथ रखवाल ठवेवी ॥ ५४ ॥ इम प्रथम उद्धारज कीधो, भरतें त्रीभुवन जस लीधो ॥ इंद्रादीक कीर्त्ति बोले, नहीं कोइ भरत नृप तोले ॥ ५५ ॥ शत्रुंजय महातममांहि, अधिकार जो जो उत्साहिं ॥ जिन प्रतिमा जिनवर सरखी, सद्दहो सूत्र भववाइ निरखी ॥ ५६ ॥वस्तु ॥ भरतें कीधो भरतें कीधो, प्रथम उद्धार, त्रीभुवन कीर्त्ति विस्तरी ॥ चंद्रसूरज लगें नाम राख्युं, तिणे समय संघपति केटला हवा ॥ सो इम शास्त्रें भांख्यु, कोमी नवाणुं नरवरा, हुआ नेव्याशी लाख ॥ भरतसमय संघपति वली, सहस चोराशी भांख ॥ ५७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ भरतपाटें हूआ आदित्ययशा, तस पाटें तस सुत महायशा ॥ अतिबलभद्र अने बलवीर्य, कीर्त्तिवीर्य अने जलवीर्य ॥ ५८ ॥ ए साते हूआ सरखी जोमि, भरतथकी गयां पूरव ठ कोमि ॥ दंमवीर्य आठमें पाट हवो, तिणे उद्धार कराव्यो नवो ॥ ५९ ॥ इंद्रें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सोइ प्रशंस्यो घणुं, नाम अजवाल्युं पूर्वज तणुं ॥ भरत तणीपरें संघवी थयो, बीजो उद्धार ते एहनो कह्यो, ॥ ६० ॥ भरतपाटें ए आठे वली, भुवन आरी शामां केवली ॥ इणे आठे सवि राखी रीत, एक न लोपी पूर्वजरीत ॥ ६१ ॥ एकसो सागर वोल्या जि सें, ईशानेंद्र विदेहमां तिसें ॥ जिनमुख सिद्धगिरि सु णी विचार, तेणें कीधो त्रीजो उद्धार ॥ ६२ ॥ एक को डी सागर वोली गयां, दीठां चैत्य विसस्थल थयां ॥ माहिंद्र चोथो सुरलोकेंद्र, कीधो चोथो उद्धार गिरींद्र ॥६३॥ सागर कोडी गया दश वली, श्री ब्रह्मेंद्र घणुं मन रली ॥ श्री शत्रुंजये तीर्थ मनोहार, कीधो तेणें पांच मो उद्धार ॥ ६४ ॥ एक कोडी लाख सागर अंतरें, चमरेंद्रादिक भवन भरूरे ॥ छठो इंद्र भवनपति तणो, ए उद्धार विमलगिरि भणो ॥ ६५ ॥ पचाश कोडी लाख सागर तणुं, आदि अजित विचें अंतर भणुं ॥ तेह विचें सूक्ष्म हुवा उद्धार, ते कहेतां नवि लाभे पार, ॥ ६६ ॥ हवे अजित बीजो जिनदेव, श त्रुंजय सेवा मिष हेव ॥ सिद्धक्षेत्र देखी गह गह्या,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अजितनाथ चोमासुं रह्या ॥ ६७ ॥ जाइ पितराइ अजित जिन तणो, सगर नामें बीजो चक्रवर्त्ती जणो॥ पुत्रमरण पाम्मो वैराग, इंडें प्रीछवियो महाजाग ॥६८॥ इंद्रवचन हियमांहे धरी, पुत्रमरण चिंता परिहरी ॥ जरत तणीपरें संघवी थया, श्रीशत्रुंजय गिरियात्रा गयो ॥ ६९ ॥ जरत मणिमय बिंब वि शाल, करयां कनक प्रासाद ऊमाल ॥ ते देखी मन हरख्यो घणुं, नाम संजारयुं पूर्वज तणु ॥ ७० ॥ जाणी पमतो काल विशेष, रखे विनाश ऊपजे रेख ॥ सो वनगुफा पश्चिमदिशि जिहां, रयणबिंब जंमारयां तिहां ॥७१॥ करी प्रासाद सयल रूपना, सोवन विंब करी थापना ॥ करयो अजितप्रासाद उदार, एह स गर सत्तम उद्धार ॥ ७२ ॥ पच्चास कोमी पंचाणुं लाख, उपर सहस पंच्चोत्तेर जांख ॥ एटला संघवी नूपति थया, सगर चक्रवर्त्ती वारें कह्या ॥ ७३ ॥ त्रीस कोमी दश लाख कोमी सार, सागर अंतर करे उद्धार ॥ व्यंतरेंद्र आठमो सुचंग, आजनंदन उपदेश उत्तंग ॥ ७४ ॥ वारे श्रीचंद्रप्रज तणे, चंद्रशेखर सुत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आदर घणे ॥ चंद्रयशा राजा मनरंज, नवमो उद्धार करयो शत्रुंज ॥ ७५ ॥ श्रीशांतिनाथ शोलमा स्वामी, रह्या चोमासुं विमलगिरि ठाम ॥ तस सुत चक्रायुध राजीयो, तिणे दशमो उद्धारज कियो ॥ ७६ ॥ कीयो शांतिप्रासाद उद्दाम, हवे दशरथसुत राजा राम ॥ एकादशमो करयो उद्धार, मुनिसुव्रतवारे मनोहार ॥ ७७ ॥ नेमिनाथ वारे जोधार, पांमव पांच करे उद्धार ॥ शत्रुंजयगिरि पूगी रली, ए द्वादशमो जाणो वली ॥ ७८ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ राग वैरामी ॥

॥ पांमव पांच प्रगट हवा, खोइ अक्षोहिणी अढार रे ॥ पोतानी पृथिवी करी, मायने कीधो जुहाररे ॥ ७९ ॥ कुंता रे माता इम जणे, वत्स सांजलो आप रे ॥ गोत्र निकंदन तुमें करयो, ते केम छुटशो पाप रे ॥ कुं० ॥ ८० ॥ पुत्र कहे सुणो मायमी, कहो अम सोय उपाय रे ॥ ते पातक किम छुटीयें, वलतुं पन्नणे माय रे ॥ कुं० ॥ ८१ ॥ श्रीशत्रुंजे तीरथ जइ सूरजकुंमें स्नान रे ॥ ऋषन्न जिणंद पूजा करो, धरो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नगवंतनुं ध्यान रे ॥ कुं० ॥ ७२ ॥ माता शिखामण मन धरी, पांडव पांचे ताम रे ॥ हत्या पातक बुटवा, पहोता विमलगिरि ठाम रे कुं० ॥ ७३ ॥ जिनवर नक्ति पूजा करी, कीधो बारमो उद्धार रे ॥ नवन नि पायो काष्टमय, लेपमय, प्रतिमा सार रे ॥ कुं० ॥ ७४ ॥ पांमव वीर विक्रें आंतरुं, वरस चोराशी सहस्स रे ॥ चिहुंसय सीतेर वर्षे हुवो, वीरथी विक्रम नरेश रे ॥७५॥

॥ ढाल नवमी ॥ पूर्वली देशी ॥

॥धन्य धन्य शत्रुंजय गिरिवरू, जिहां हुवा सिद्ध अनंत रे ॥ वली होशे इणे तीरथें, इम नांखे नगवंत रे ॥ धन्य० ॥ ७६ ॥ विक्रमथी एकसो आठे, व रसें हूउं जावमशाह रे ॥ तेरमो उद्धार शत्रुंजे क रयो, थाप्या आदिजिन नाह रे ॥ धन्य० ॥ ७७ ॥ प्रतिमां नरावी रंगशुं, नवा श्री आदिजिणंद रे ॥ श्री शत्रुंज शिखरेंथापिया, प्रासादें नयनानंद रे ॥ धन्य० ॥ ७८ ॥ पांमव जावम आंतरे, पचवीश कोमी म याल रे ॥ लाख पंचाणुं ऊपरे, पंचोत्तर सहस्स नूपा ल रे ॥ धन्य० ॥ ७९ ॥ एटला संघवी हूआ हवे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चउदशमो उद्धार विशाल रे ॥ बारतेरोत्तरे सोय क रे, मंत्री बाहडदे श्रीमाल रे ॥ धन्य० ॥९०॥ ( प्रतिमा जरावी रंगशुं नवी श्री ऋषभ जिणंदरे॥बीजे शिखरें थपावियो, प्रासाद नयणानंद रे ॥ धन्य०॥ ९१ ॥) बार ठयाशीये मंत्री वस्तुपालें, यात्रा शत्रुंजय गिरिसार रे ॥ तिलक तोरणशुं करे, श्री गिरनारे अवतार रे ॥ धन्य० ॥ ९२ ॥ संवत तेर एकोत्तरें, श्री उसवंश शणगार रे ॥ शाह समरो द्रव्य व्यय करे, पंचदशमो उद्धार रे ॥ धन्य० ॥ ९३ ॥ श्रीरत्नाकर सूरीश्वरू, वरू तपगछ शणगार रे ॥ स्वामी ऋषजज थापीया, समरेशाहे उदार रे ॥ धन्य० ॥ ९४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ उलालानी देशीमां ॥

॥ जावड समरा उद्धार, एह वच्चें त्रण लाख सार ॥ ऊपर सहस चोराशी, एटला समकेत वासी ॥ ९५ ॥ श्रावक संघपति हुआ, सत्तर सहस जावसार जूआ ॥ छत्रीशोल सहस जाणुं, पन्नर सहस विप्र वखाणुं ॥ ९६ ॥ कणबी बार सहस कहियें, ले खेआ नव सहस लहियें ॥ पंच सहस पीस्तालीश,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

एटला कंसारा कहीश ॥ ९७ ॥ सवि जिनमति जा व्या, श्री शत्रुंजय यात्रायें आव्या ॥ अवरनी संख्या न जाणुं, पुस्तक दीठे ते वखाणुं ॥ ९८ ॥ सात सह स मेहर संघवी, जात्रा तलहटीयें तस हवी ॥ बहु श्रुत वचनें ए राचुं, ए सवि मानजो साचुं ॥ ९९ ॥ जरत समराशाह अंतर, संघवी असंख्यात इणी प र ॥ केवली विण कुण जाणे, किम छद्मस्थ वखाणे ॥ १०० ॥ नवलाख बंधी बंध काप्या, नवलाख हेम टका तस आप्या ॥ तो देशलहमियें अन्न चाख्युं, समरेशाहें नाम राख्युं ॥ १०१ ॥ पन्नर सत्याशीये प्रधान, बादशाहें बहुमान ॥ करमेशाहें जस लीधो, उद्धार शोलमो कीधो ॥ १०२ ॥ इण चोवीशीयें विमल गिरि, विमलवाहन नृप आदरी ॥ दुःप्रसह गुरु उप देशे, उद्धार छेहलो करेशे ॥ १०३ ॥ एम वली जे गु णवंत, तीरथ उद्धार महंत ॥ लक्ष्मी लही व्यय करशे, तस बहुजवकारज सरशे ॥ १०४ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥ माइ धन्य सुपनतुं ॥

॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य शत्रुंजय गिरि, सिद्धक्षेत्र ए गाम ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कर्मक्षय करवा, घरे बेठां जपो नाम ॥ १०५ ॥ चो वीशीयें इण गिरि, नेम विना त्रेवीश ॥ तीरथ भूइ जाणी, समोसरया जगदीश ॥ १०६ ॥ पुंडरिक पंच कोडीशुं द्राविड वारिखिल्ल जोड ॥ काति पूनम सी धा, मुनिवरशुं दश कोड ॥ १०७ ॥ नमि विनमि वि द्याधर, दोय कोडि मुनि संयुत ॥ फागुण शुदि दश मी, इणेंगिरि मोक्ष पहूत ॥ १०८ ॥ श्री ऋश भवंशी नृप, भरत असंख्याता पाट ॥ मुक्तें सर्वार्थ, एह गिरि शिवपुर वाट ॥ १०९ ॥ राममुनि भरतादि क, मुनि त्रण कोडीशुं एम ॥ नारदशुं एकाणुं, लाख मुनीश्वर तेम ॥ ११० ॥ मुनि सांब प्रद्युम्नशुं, साडी आठ कोडी साध ॥ वीश कोडीशुं पांडव, मुगतें गया निराबाध ॥ १११ ॥ वली थावच्चासुत, शुक मुनि वर इणे ठाम ॥ एम सहस्सशुं सिद्धा, पंचशत सै लंग नाम ॥ ११२ ॥ इम सिद्धा मुनिवर, कोडाकोडी अपार ॥ वली सीझशे इणें गिरि, कुण कही जाणे पार ॥ ११३ ॥ सात छठ दोय अठम, गणे एक लाख नव कार ॥ शत्रुंजय गिरि सेवे, तेहने दोय अवतार ॥११४॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल बारमी ॥ वधावानी देशी ॥

॥ मानव भव में भलें लह्यो, लह्यो ते आरज देश॥ श्रावक कुल लाधुं भलुं, जो पाम्यो रे वाहालो ऋषभ जिनेश के ॥ ११५ ॥ भेट्यो रे गिरिराज, हवे सीधांरे म हारां वांछित काज के, मुने डूठो रे त्रिभुवनपति आज के॥भेट्यो०॥११६॥ ए आंकणी॥ धन्य धन्य वंश कुलगर तणो, धन्य धन्य नाभिनरिंद ॥ धन्य धन्य मरुदेवामा वमी, जेणें जायो रे वहालो ऋषभ जिणंद के॥भे०॥ ११७ धन्यधन्य शत्रुंजय तीरथ, रायण रूख धन्य धन्य॥धन्य पगलां प्रभु तणां, जे पेखीरे मोह्युं मुझ मन्न के ॥भे० ॥ ११८॥ धन्य धन्य ते जग जीवमा, जे रहे शत्रुंजय पा स॥अहो निश ऋषभ सेवा करे, वली पूजे रे मनने उल्ला स के॥भे० ॥ ११९ ॥ आज सखी मुझ आंगणे, सुरतरु फलियो सार ॥ ऋषभ जिनेसर वांदीयो, हवे तरियो रे भवजल निधि पार के॥भेट्यो० ॥१२०॥ शोल अमत्रीशे आशो मासें, शुदि तेरश कुज वार ॥ अहम्मदावाद नयर मांहे,मेंगायोरे शत्रुंजय उद्धार के०भेटयो० ॥१२१ वम तपगछ गुरु गछपति, श्रधन्नरत्न सूरिंद ॥ तस

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शिष्य तस पट जयकरु, गुरु गछपति रे अमररत्न सूरिंद के ॥ नेट्यो० ॥ १२२ ॥ विजयमान तस पटधरू, श्री देवरत्न सूरीश ॥ श्री धनरत्न सूरीशना, शिष्य पंमित रे जानुमेरु गणीश के ॥नेट्यो० ॥१२३॥ तसपद कमल भ्रमर जणे, नयनसुंदर दे आशीष ॥ त्रिजुवन नायक सेवतां,हवे पूगी रे श्रीसंघजगीश के ॥ नेट्यो० ॥१२४॥

॥ कलश ॥ इम त्रिजग नायक, मुक्ति दायक, विमल गिरि, मंमण धणी ॥ उद्धा शत्रुंजय, सार गायो, थुएयो जिन, जक्तें घणी ॥ जानु मेरु पंमित, शिष्य दोय कर, जोमी कहे, नसुंदरो ॥ प्रजु पाय सेवा, नित्य करेवा, देह॥ दरिसन, जय करो ॥ १२५ ॥ इति ॥

श्री गौतमाय नमः ॥

## ॥ अथ श्रीसिद्धगिरिस्तुतिप्रारंजः ॥

॥ श्री आदीश्वर अजर अमर, अव्याबाध अहनीश ॥ परमातम परमेसरू, प्रणमुं परम मुनीश ॥ १ ॥ जय जय जगपति ज्ञानजान, जासित लोकालोक ॥ शुद्धस्वरूप समाधिमय नमित सुरासुर थोक ॥ २ ॥ श्रीसिद्धाचल मंमणो, नाजिनरेसर नंद ॥ मिथ्यामति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मत नंजणो, नविकुमुदाकर चंद ॥ ३ ॥ पूर्व नवाणुं जस शिरें, समवसरया जगन्नाथ ॥ ते सिद्धाचल प्रणमियें, नक्तें जोमी हाथ ॥४॥ अनंत जीव इण गिरि वरें, पाम्या नवनो पार ॥ ते सिद्ध० ॥ लहियें मंगल माल ॥ ५ ॥ जस शिर मुकुट मनोहरू, मरुदेवीनो नंद ॥ ते सिद्धा० ॥ रुद्धि सदा सुखवृंद ॥६॥ महिमा जेहनी दाखवा, सुरगुरु पण मतिमंद ॥ ते तीर्थेश्वर प्रणमीयें, प्रगटे सहजानंद ॥ ७॥ सत्ताधर्म समारवा, कारण जेहपरुर ॥ ते तीर्थे० ॥ नासे अघ सवि दूर ॥७॥ कर्मकाट सवि टालवा, जेहनुं ध्यान हुताश ॥ ते तीर्थे० ॥ पामीजें सुखवास ॥ ए ॥ परमानंद दशा लहे, जस ध्याने मुनिराय ॥ ते० ॥ पातक दूर पलाय ॥ १० ॥ श्रद्धानासन रमणता, रत्नत्रयीनुं हेतु ॥ ते० ॥ नव मकराकर सेतु ॥ ११ ॥ महापापी पण निस्तरया, जेहनुं ध्यान सुहाय ॥ ते० ॥ सुर नर जस गुण गाय ॥१२॥ पुंमरिक गणधर प्रमुख, सीधा साधु अनेक ॥ ते० ॥ आणी ह्रदय विवेक ॥ १३ ॥ चंद्रशेखर स्वसा पति, जेहने संगें सिद्ध ॥ ते० ॥ पामीजें निज रुद्धि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १४ ॥ जलचर खेचर तिरिय सवे, पाम्या आतम नाव ॥ते०॥ नवजस तारण नाव ॥ १५ ॥ संघयात्रा जेणें करी, कीधा जेणें उद्धार ॥ ते० ॥ ठेदीजें गति चार ॥१६॥ पुष्टिशुद्ध संवेग रस, जेहने ध्यानें थाय ॥ ते० ॥मिथ्यामति सवि जाय ॥ १७ ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवि, सुरघट सम जसध्याव ॥ ते० ॥ प्रगटे शुद्ध स्वनाव ॥ १८ ॥ सुरलोकें सुरसुंदरी, मलि मलि थोकें थोक ॥ते० ॥ गावे जेहना श्लोक ॥ १९ ॥ योगीश्वर जस दर्शनें, ध्यान समाधि लीन ॥ ते० ॥ हुआ अनु नव रस लीन ॥ २० ॥ मानुं गगनें सूर्य शशी, दिये प्रदक्षिणा नित्य ॥ते०॥ महिमा देखण चित्त ॥ २१ ॥ सुर असुर नर किन्नरा, रहे ठे जेहनी पास ॥ ते० ॥ पामे लीलविलास ॥ २२ ॥ मंगलकारी जेहने, मृतका हरिन्नेट ॥ ते० ॥ कुमति कदाग्रह मेट ॥२३॥ कुम ति कौशिक जेहने, देखी झांखा थाय ॥ ते० ॥ सवि तस महीमा गाय ॥ २४ ॥ सूरज कुंरुना नीरथी, आ धि व्याधि पलाय ॥ ते० ॥ जस महिमा न कहाय ॥ २५ ॥ सुंदर टूक सोहामणी, मेरुसम प्रासाद ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ते० ॥ दूर टले विखवाद ॥ २६ ॥ द्रव्य भाव वैरी त णा, जिहां आवे होय शांत ॥ ते० ॥ जाये भवनी भ्रांत ॥ २७ ॥ जगहितकारी जिनवरा, आव्या एणें ठाम ॥ ते० ॥ जस महिमा उद्दाम ॥ २८ ॥ नदी श त्रुंजी स्नानथी, मिथ्यामल धोवाय ॥ ते० ॥ सवि जनने सुखदाय ॥ २९ ॥ आठ कर्म जे सिद्धगिरें, न दीये तीव्र विपाक ॥ ते० ॥ जिहां नवि आवे काक ॥ ३० ॥ सिद्धशिला तपनीयमय, रत्नस्फाटिक खाण ॥ ते० ॥ पाम्या केवल नाण ॥ ३१ ॥ सोवन रूपा रत्ननी, औंषधि जात अनेक ॥ ते० ॥ न रहे पातक एक ॥ ३२ ॥ संयमधारी संयमें, पावन होय जिण खेत्र ॥ ते० ॥ देवा निर्मल नेत्र ॥ ३३ ॥ श्रावक जिहां शुभ द्रव्यथी, उत्सव पूजा स्नात्र ॥ ते० ॥ पोषे पात्र सुपात्र ॥ ३४ ॥ सहामिवत्सल पुण्य जिहां, अनंतगुणुं कहेवाय ॥ ते० ॥ सोवन फूल वधाय ॥ ३५ ॥ सुंदर जात्रा जेहनी, देखी हरखे चित्त ॥ ते० ॥ त्रिभुवनमांहे विदित्त ॥ ३६ ॥ पालीताणुं पुर भलुं, सरोवर सुंदर पाल ॥ ते० ॥ जाये सकल जंजाल ॥३७॥ मनमोहन पागे चढे, पग पग कर्म

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

खपाय ॥ ते० ॥ गुण गुणि नाव लखाय ॥ ३८ ॥ जेणे गिरि रूंख सोहामणा, कुंजें निर्मल नीर ॥ ते० ॥ ऊतारे नवतीर ॥३९॥ मुक्तिमंदिर सोपान सम, सुंदर गिरिवर पाज ॥ ते ॥ लहियें शिवपुर राज ॥ ४० ॥ कर्मकोटि अब विकटनट, देखी धुजे अंग ॥ ते० ॥ दिन दिन चढते रंग ॥४१॥ गौरी गिरिवर उपरें, गावेजिनवर गीत ॥ ते० ॥ सुखें शासनरीत ॥ ४२ ॥ कवरु यक्ष रखवाल जस, अहोनिश रहे हजूर ॥ ते० ॥ असुरां राखे दूर ॥ ४३ ॥ चित्त चातुरी चक्केंसरी, बिघ्न विनासणहार ॥ ते० ॥ संघ तणी करे सार ॥ ४४ ॥ सुरवरमां मघवा यथा, ग्रहगणमां जिम चंद ॥ ते० ॥ तिम सवि ती रथ इंद ॥ ४५ ॥ दीठे दुर्गति वारणो, समरयो सारे काज ॥ ते० ॥ सवि तीरथ शिरताज ॥ ४६ ॥ पुंरु रिक पंच कोरीशुं, पाम्या केवल नाण ॥ ते० ॥ कर्म तणी होय हाण ॥ ४७ ॥ मुनिवर कोरी दश सहित, द्रविरु अने वारिखेण ॥ ते० ॥ चाढिया शिव निश्रेण ॥ ४८ ॥ नमि विनमि विद्याधरा, दोय कोरी मुनिसाथ ॥ ते० ॥ पाम्या शिवपुरे आथ ॥४९॥ रुषनवंशीय नरपति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

घणा, इण गिरि पहोता मोक्ष ॥ते०॥ टाल्या घातिक दोष ॥ ५० ॥ राम भरत बिहुं बांधवा, त्रण कोमी मुनियुत ॥ ते० ॥ इणेगिरि शिव संपत्त ॥ ५१ ॥ नारद मुनिवर निर्मलो, साधु एकाणुं लाख ॥ ते० ॥ प्रवचन प्रगट ए भांख ॥ ५२ ॥ सांब प्रद्युम्न ऋषि कह्या, साम्री आठे कोमि ॥ ते० ॥ पूर्वकर्म विछोमि ॥ ५३ ॥ थाव-च्चासुत सहसशुं, अणसण रंगें कीध ॥ ते० ॥ वेगें शिवपद लीध ॥ ५४ ॥ शुक परमाचारज वली, एक सहस अणगार ॥ ते० ॥ पाम्या शिवपुर द्वार ॥ ५५ ॥ शैले सूरि मुनि पाचशे, सहित हुआ शिवनाह ॥ते०॥ अंगें धरी उत्साह ॥५६॥ इम बहु सिद्धाइणे गिरं, कहेतां नावे पार ॥ते०॥ शास्त्रमांहे अधिकार ॥ ५७ ॥ बीज इहां समकित तणुं, रोपे आतम भोम ॥ ते० ॥ टाले पातक स्तोम ॥ ५८ ॥ ब्रह्म स्त्री भ्रुणगोहत्या, पापें भारित जेह ॥ ते० ॥ पहोता शिवपुर तेह ॥ ५९ ॥ जग जोतां तीरथसवे, ए सम अवर न दीठ ॥ते०॥ तीर्थ मांहे उक्किठ ॥ ६० ॥ धन धन सोरठ देश जिहां, तीरथमांहे सार ॥ ते० ॥ जनपदमां शिरदार ॥ ६१ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अहो।नश आवत डुंकमा, ते पण जेहने संघ ॥ते०॥ पाम्या शिव वधू रंग ६२ ॥ विराधक जिणआणना, ते पण हुआ विशुद्ध ॥ ते० ॥ पाम्या निर्मल बुद्ध ॥६३॥ महाम्लेछ शासन रिपु, ते हुआ उपशंत ॥ते०॥ महिमा देखी अनंत ॥६४॥ मंत्र योग अंजन सवे, सिद्ध हुवे जिण ठाम ॥ ते० ॥ पातकहारी नाम ॥ ६५ ॥ सुमति सुधारस वरसते, कर्मदावानल संत ॥ ते० ॥ उपशम तस उल्लसंत ॥ ६६ ॥ श्रुतधर नितु नितु उप दिशे, तत्त्वातत्त्व विचार ॥ ते० ॥ ग्रहे गुणयुत श्रोता र ॥ ६७ ॥ प्रियमेलक गुणगण तणुं, कीर्त्तिकमला सिंधु ॥ ते० ॥ कलिकालें जगबंधु ॥ ६८ ॥ श्रीशांति तारणतरण, जेहनी उक्ति विशाल ॥ ते० ॥ दिन दिन मंगलमाल ॥ ६९ ॥ श्वेतध्वजा जस लहकती, उांखे उविने एम ॥ ते० ॥ उमण करो ठो केम ॥ ७० ॥ साधक सिद्धदशा उणी, आराधे एक चित्त ॥ ते० ॥ साधन परम पवित्त ॥ ७१ ॥ संघपति थइ एहनी, जे करे उावें यात्र ॥ ते० ॥ तस होय निर्मल गात्र ॥ ७२ ॥ शुद्धातम गुण रमणता, प्रगटे जेहने संग ॥ ते० ॥ जेहनो जस अभंग ॥ ७३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रायणवृक्ष सोहामणो, जिहां जिनेश्वर पाय ॥ ते० ॥ सेवे सुरनरराय ॥ ७४ ॥ पगलां पूजी रुषजनां, उपशम जेहने चंग ॥ ते० ॥ समता पावन अंग ॥ ७५ ॥ विद्याधरज मले बहु, विचरे गिरिवर शृंग ॥ ते० ॥ चढते नवरस रंग ॥ ७६ ॥ मालती मोघर केतकी, परिमल मोहे नंग ॥ ते० ॥ पूजो नवि एकंग ॥ ७७ ॥ अजित जिनेसर जिहां रह्या, चोमासुं गुणगेह ॥ ॥ ते० ॥ आणी अविहड नेह ॥ ७८ ॥ शांति जिनेसर शोलमा, शोल कषाय करि अंत ॥ ते० ॥ चतुर मास रहंत ॥ ७९ ॥ नेमि विना जिनवर सवे, आव्या ते जिण ठाम ॥ ते० ॥ शुद्ध करे परिणाम ॥ ८० ॥ नमि नेम जिन अंतरें, अजित शांतिस्तव कीध ॥ ते० ॥ नंदिषेण प्रसिद्ध ॥ ८१ ॥ गणधर मुनि उवज्झाय तिम, लाज लह्या केइ लाख ॥ ते० ॥ ज्ञानअमृत रस चाख ॥ ॥ ८२ ॥ नित्य घंटा टंकारवें, रण झणे जह्वरी नाद ॥ ते० ॥ दुंदुभि मादल वाद ॥ ८३ ॥ जेणें गिरें नरत नरेश्वरं, कीधो प्रथम उद्धार ॥ ते० ॥ मणिमय मूरति सार ॥ ८४ ॥ चौमुख चउगति दुःख हरे, सोवनमय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुविहार ॥ ते० ॥ अक्षय सुख दातार ॥ ७५ ॥ इत्या-
दिक महोटा कह्या, शोल उद्धार सफार ॥ ते० ॥
लघु असंख्य विचार ॥ ७६ ॥ द्रव्यभाव वैरी तणो,
जेहथी थाये अंत ॥ ते० ॥ शत्रुंजय समरंत ॥ ७७ ॥
पुंमरिक गणधर हुआ, प्रथम सिद्ध इणे ठाम ते० ॥
पुंमरिक गिरि नाम ॥ ७८ ॥ कांकरे कांकरे इणे गि-
रि, सिद्ध हुआ सुपवित्त ॥ ते० ॥ सिद्धखेत्र समचित्त
॥ ७९ ॥ मल द्रव्यभाव विशेषथी, जेहथी जाये
दूर ॥ ते० ॥ विमलाचल सुखपूर ॥ एं० ॥ सुरवरा ब-
हु जे गिरें, निवसे निर्मल ठाण ॥ ते० ॥ सुरगिरि
नाम प्रमाण ॥ ८१ ॥ पर्वत सहुमांहे वमो, महागिरि
तेणें कहंत ॥ ते० ॥ दर्शन लहे पुण्यवंत ॥ ८२ ॥
पुण्य अनर्गल जेहथी, थाये पाप विनाश ॥ ते० ॥
नाम जलुं पुण्यराशि ॥ ८३ ॥ लक्ष्मीदेवी जे जणयो,
कुंजें कमल निवास ॥ ते० ॥ पद्मनाम सुवास ॥
॥ ८४ ॥ सवि गिरिमां सुरपति समो, पातक पंक वि-
लात ॥ ते० ॥ पर्वत इंद्र विख्यात ॥ ८५ ॥ त्रिजुव-
नमां तीरथ सवे, तेमां महोटो एह ॥ ते० ॥ महा-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तीर्थ जस रेह ॥ ए६ ॥ आदि अंत नहिं जेहनी, कोइ कालें न विलाय ॥ ते० ॥ शाश्वतगिरि कहेवाय ॥ए७॥ नद्र नला जे गिरिवरें, आव्या होय अपार ॥ ते० ॥ नाम सुनद्र संनार ॥ ए८ ॥ वीर्य वधे शुन साधुने. पामी तीरथ नक्ति ॥ ते० ॥ नामें जे दृढशक्ति ॥ ए९ ॥ शिवगति साधे जे गिरे, तेमाटें अनिधान ॥ ते० ॥ मुक्तिनिलय गुणखाण ॥ १०० ॥ चंद सूरज समकित धरी, सेव करे शुन चित्त ॥ ते० ॥ पुप्फदंत विदित्त ॥ ॥ १०१ ॥ निन्न रहे नव जलथकी, जे गिरि लहे निवास ॥ ते० ॥ महापद्म सुविलास ॥ १०२ ॥ नूमि धरीजें गिरिवरें, उदधि न लोपे लीह ॥ते०॥ पृथिवीपीठ अनीह ॥१०३॥ मंगल सवि मलवा तणुं, पीठ एह अनिराम ॥ते०॥ नद्रपीठ जस नाम ॥१०४॥ मूलजस पातालमें, रत्नमय मनोहार ॥ ते० ॥ पाताल मूल विचार ॥१०५॥ कर्मक्षय होये जिहां, होय सिद्ध सुखकेल ॥ ते० ॥ अकर्म करे मन मेल ॥१०६॥ कामित सवि पूरण होये, जेहनुं दरिसण पाम ॥ते०॥ सर्वकाम मन गम ॥१०७॥ इत्यादिक एकवीश नलां, निरुपम नाम उदार ॥ जे स-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मरघां पातक हरे, आतम शक्ति अनुहार ॥ १०८ ॥
॥ कलश ॥ इम तीर्थ नायक, स्तवन लायक, सं-थुण्यो श्री, सिद्धगिरि ॥ अष्टोत्तरसय, गाह स्तवनें, प्रे-मनक्तें, मन धरी ॥ श्री कल्याणसागर, सूरि शिष्यें, शुन्न जगीशें, सुखकरी ॥ पुण्यमहोदय, सकल मंगल, वेलि सुजसें, जयसिरी ॥ १०९ ॥ इति सिद्धगिरिस्तुतिः

## ॥ अथ श्री आदिनाथ विनतिरूप श्री शत्रुंजय स्तवन ॥

॥ पणमवि सयल जिणंद पाय, मनोवांछित कामी॥ सयल तीरथनो राजीयो ए, प्रणमुं शिर नामी ॥ जस दरिसन दुर्गति टले ए, नासे सवि रोग ॥ स्वजन कुटुंब मेला मले, ए मनोवांछित नोग ॥ १ ॥ नान्नि कुमर जग जाणीयें, ए मरुदेवीनो नंद ॥ वदनकमल दीपे अति नलुं, ए जाणे पूनम चंद ॥ शत्रुंजा केरो राजीयो ए, सोवन मय काया ॥ उंचपणे सय धनुष पंच प्रणमे सुरराया ॥ २ ॥ चोशठ इंद्र आवें दश ए, सुर सेवा सारे ॥ त्रिनुवनतारण वीतराग, नव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पार उतारे ॥ चालोने शत्रुंजे जाइयें ए, हरखें कीजें जात्र ॥ सूरजकुंमें स्नान करी, कीजें निर्मल गात्र ।३॥ खीरोदक सम धोतीयां ए, उंढण बादर चीर ॥ कनककलश साथें लइ, जरीयें निर्मल नीर ॥ बावना चंदन घही घणुं ए, कचोलां जरीयें ॥ युगा दिदेव पूजा करी ए, जवसायर तरीयें ॥ ४ ॥ चंपक केतकी मालती ए, मांहे दमणो सोहे ॥ कुसुममाल कंठें ठवो ए, जवियण मन मोहे ॥ कर जोमीने वीनवुं ए, सुणो स्वामी वात ॥ धर्मविना नर जव गयो ए, नवि जाएयो जात ॥ ५ ॥ काम क्रोध मद लोज वशें, जे में कीधां पाप ॥ प्रेम घरीने मुक्ति यो, आदीश्वर बाप ॥ शांतिनाथ मरुदेवी जुवन, बेहु जमणां सोहे ॥ आगल अद्भुत वंदतां ए, जवि जन मन मोहे ॥ ६ ॥ परव एक वरुहेठ अठे, पासें पांच देहरी । इंद्र थंज आगें निरखतां ए, टाले जव फेरी ॥ कुंतासर कोमें करी ए, ललिता सर जोरु ॥ नीर विना शोजे नहीं ए, एतो महोटी खोरु ॥७॥ ते आगल रामपोल ठे, दीसे अजि राम ॥ पासें वाघण तप तपे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए, तस सीधां काम ॥ खरतर वसहीने विमलवसही, बेहु पहिलां आदीश्वर देखो ॥ ८ ॥ रूावेपासें, जिमणे पासें, प्रतिमा अति दीपे ॥ पुंरूरिक बिंब अति नलुं ए, रूपें त्रिजुवन जीपे ॥ महोटी प्रदक्षि-णा देहरे ए, एकसो एक जाणुं ॥ तेम नान्ही हरखें कहुं ए, पच्चास वखाणुं ॥ ए ॥ कवरू यक्ष गोमुख नलो ए, चक्केसरी देवी ॥ शत्रुंजय सान्निध करे ए, संघ विघ्न हरेवी ॥ रायण हेठें पगलां अछे, आदीश्वर केरां ॥ नावें नवि पूजा करो ए, टालो नव फेरा ॥ १० ॥ शशत्रुंजय बिंब संख्या सुणो ए, पन्नरशें ने पांसठ ॥ न्हानां महोटां देहरां देहरी, त्र णशेंछाशठ ॥ सीत्तरिसय जिनवर तणा ए, रूप पाटीयें दीसे ॥ खरतरवसहीमां पेसतां ए, जोतां मन हींसे ॥ ११ ॥ एकावन उंरसा नला ए, जेणे सुखरू घसीयें ॥ आदिदेव पूजा करी ए, जइ शिवपुर वसीयें ॥ देहरा उपर गोमटी ए, संख्या सुणो वात ॥ एकसो एकशठ में गणी ए, मूकी परनी तांत ॥ १२ ॥ जिन जुवन शिर उपरें ए पांच चोमुख शोहे ॥ सुर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नरनारी सहु तणुं ए, दीठे मन मोहे ॥ त्रण कोट अति मनोहरु ए, जाणे त्रिगडु दीसे ॥ खरतरवसही मांहे जला ए, जोतां मनहुं हीसे ॥ १३ ॥ पांच मूरति पांडव तणी ए, जोतां अन्निराम ॥ चौमुख प्रतिमा शोन्नती ए, सुर करे गुणग्राम ॥ जलखा जोल चेलणा तलावडी ए, सिद्धशिला तिहां रूडी ॥ सिद्धवड सिद्धतणुं ठाम ए, नहिं वातज कूडी ॥ १४ ॥ आदीश्वरनी मूल प्रतिमां, न्नरतेश्वरें कीधी ॥ पाचशें धनुषनी रत्नमय, करी मुक्तिज लीधी ॥ ते प्रतिमा शत्रुंजे अछे, पण कोइ न पेखे ॥ न्नव त्रीजे मुक्ति लहे, नर तेहीज देखे ॥१५॥ आदीश्वरने मूल देहरे पावडीयां बत्रीश ॥ नागमोरनां रूप देखी, नवि कीजें रीश ॥ रायण वड पींपल कहुं ए, आंबलीय जगीश ॥ त्रण कोटमांहे महोटा ए, जाम छे एकवीश ॥ १६ ॥ कोट देहरानां कांगरां ए, बारशें बाशठ ॥ थंन्न अग्यारशें में गण्या ए, उपर पांशठ ॥ इसर कुंड ने न्नीमकुंड, जुजकुंड वखाणुं ॥ खोडीयारकुंड शिलार कुंड, तेहनो पार न जाणुं ॥ १७ ॥ सोवन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सिद्धरस कूपिका ए, चोखा फिटकनी खाण ॥ चार पाज शत्रुजे चढी ए, कीजें कर्मनी हाण ॥ नीली धोली पर्व बेहु, होवे तेहिज नाम ॥ संघ यात्र, करी तिहां मले ए, वीशामा ठाम ॥ १८ ॥ आदिपुरुं रलियामणुं, दीठां पापज नासे ॥ शत्रुंजी जली नदी वहे, शत्रुंजेगिरि पासें ॥ इंद्रपुरी समोवडे ए, पालीताणुं नयर ॥ उत्तंग प्रासाद जिहां जिनो तणां, दीठे नासे वयर ॥ १९ ॥ मानसरोवर समवडें ए, ललितासर सोहे ॥ वनवाडी आराम ठामा इंद्रादिक मोहे ॥ शत्रुंजो शिवपुर समोवडें ए, ज्ञानी इम बोले ॥ त्रिजुवनमांहे तीरथ नहिं ए, शत्रुंजा गिरि तोले ॥ २० ॥ ए तीरथ संख्या में कही ए, शत्रुजय गिरि केरी ॥ जे नर नारी जणे गुणे ए, तस टाले जव फेरी ॥ संकट विकट सवि टले ए, शत्रुंजय गिरिनामें ॥ सकल कर्मनो क्षय करी ए, ते शिवपुर पामे ॥ २१ ॥ तपगछनाथक गुणनिलो ए, गुरु हीरजी राया ॥ मनमोहन विजयसेन सूरि, तेहना प्रणमुं पाया ॥ विमलहरख शिष्य प्रेम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विजय, कहे निसुणो देव ॥ नव नव शत्रुंजा गिरितणी ए, मुऊ देजो सेव ॥ २२ ॥

॥ कलश ॥ इम मुएयो स्वामी, मुक्तिगामी, आदिजिन जगदेव ए ॥ नित्य नमे सुर नर, असुर व्यंतर, करे अहोनिश, सेव ए ॥ जे नणे नगतें, नली युक्तें, तस घर जयजय, कार ए ॥ कहे कवियण, सुणो नवियण, जिम पामो, नर पार ए ॥ २३ ॥ इति श्रीशत्रुंजय स्तवनं ॥

॥ अथ ॥

## ॥ श्री अमृतविजयजीकृत श्री शत्रुंजय तीर्थमालाप्रारंन; ॥

॥ ढाल पहेली ॥ गरबानी देशीमां ॥ जगजीवन जालम यादवा रे, तुमें शाने रोको ठो रानमां ॥ तुमें सघले कहेवाउं ठो माधवा रे ॥ तुमें० ॥ ए देशी ठे ॥

॥ विमलाचल विमला बारू रे, नलें नवियण नेटो नावमां ॥ तुमें सेवो ए तीरथ तारु रे, जिम न पमो नवना दावमां ॥ नलें० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जग सघला तीरथनो नायक, हांरे तुमें सेवो शिवसुख दायक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ जलें० ॥ २ ॥ ए गिरिराजने नपणें निहाली, हांरे तुमे सेवो अवधि दोष टाली रे ॥ जलें० ॥ ३ ॥ मुक्ता सोवन फूलें वधावो, हांरे नमी पूजोने जावना जावो रे ॥जलें०॥४॥ कांकरे कांकरे सिद्ध अनंता, हांरे संजारो पाजें चढंता रे ॥जलें०॥५॥ आदि अजित शांति गौतम केरां, पहेलां पगलां पूजो जलेरां रे ॥ जलें० ॥ ६ ॥ आगें धोली परव टुंके चढियें, तिहां जरतचक्री पद नमीयें रे ॥ जलें० ॥ ७ ॥ निली परव अंतरालें आवे, हांरे नेमी वरदत्त पगलां सोहारे रें ॥ जलें० ॥ ८ ॥ आदिथुज नमिकुंरु कुमारा, हिंगलाजहडे चढो प्यारा रे ॥ जलें० ॥ ए ॥ तिहां कलिकुंरु नवि श्रीपास, हांरे चढो मान मोरी उल्लास रे ॥ जलें०॥१०॥ गुणवंत गिरिना गुण गाई,ढाला कुंरें विशमो जाइरे ॥जलें०॥ ॥ ११ ॥ तिहांथी मकागालीपंथें धसीयें, प्रजुगढ देखीने उल्लसीयें रे ॥ जलें० ॥ १२ ॥ नमीयें नारद अ-इमत्तोनी मूरति, वली डाविरु वारिखिल्ल सुरति रे ॥ जलें० ॥ १३ ॥ तीरथजूमि देखी सुख जागे, निरखो हेमकुंरुने आगे रे ॥जले०॥१४॥ राम जरत शुक सेल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ग स्वामी, हांरे थावच्चा नमुं शिर नामी रे ॥ जले० ॥१५॥ भूषणकुंढ वामी जोइ वंदो ,सुकोशल मुनि पद सुख कंदो रे ॥ जले० ॥१६॥ आगल हनुमंत वीर कहाये, हांरे तिहांथी बेवाटें जवायें ॥ जले० ॥ १७ ॥ मावी दिश रामपो हुं रंजी, साहामी दीसे नदी शत्रुंजी रे ॥ जले० ॥ १८ ॥ जातां जमणी दिसे वंदो जाली, मुनि जाली मयाली उवयाली रे ॥ जले० ॥ १९ ॥ तिहांथी मावी दिशें साहामा सोहावे, नमो देवकी षट्सुत जावे रे ॥ जले० ॥ २० ॥ इम शुजजाव थकी उत्कर्षे, रामपोलमां पेसीये हरखे रे ॥ जले० ॥ ॥ २१ ॥ कुंतासर पाले नवघण जालो, जेह कीधी शा ह सुगालो रे ॥ जले० ॥ २२ ॥ धाइ सोपान चढी अति हरखो, जइ वाघणपोले निरखो रे ॥ जले० ॥ ॥२३॥ थिरताये शुज योग जगावो, कहे अमृत जावया जावो रे ॥ जले० ॥ २४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ सीता हरखीजी,उंआयो यनुमं तको लश्कर, घटा ज्युं उमटी श्रावनकी ॥ सीता हरखी जी हरखी जी ॥ ए देशी ॥

॥ निरखी जी निरखी जी, हुंतो हरखुंरे निरखी जी ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हरखो जी हरखी जी, हुंतो प्रणमुं रे हरखी जी ॥ ए आंकणी ॥ अति हरखें संचरतां, जोतां जिनघर उं-लां उलें जी ॥ जीव जगामी शीश नमामी, आवी हाथीपोलें ॥ हुं तो प्रणमुं रे हरखी जी ॥ह०॥ १ ॥ आ-गल पुंमरिक पोलें चढतां. प्रणमुं बे कर जोमी जी ॥ तीरथपतिनुं जुवन निहाली, कर्मजंजीर मे तोमी ॥ हुंतो० ॥ २ ॥ मूलगंजारे जातां मानुं, सुकृत सघलां तेमी जी ॥ उत्कण दुःकृत दूर पलायां, नाखी कुगति उखेमी ॥ हुं० ॥ ३ ॥ दीगो लामण मरुदेवीनो, बेगो तीरथ थापी जी पूरव नवाणुं वार आव्याथी, जग-मां कीर्ति व्यापी ॥ हुं० ॥ ४ ॥ श्रीआदीश्वर विधिशुं वांदी, बीजा सर्व जुहारुं जी ॥ नेमि विनेमि काउस्स-ग्गिया पासें, जोइ जोइ आतम तारुं ॥ हुं० ॥ ५ ॥ साहामां गजवर खंधे बेठां, जरत चक्रीनी मामी जी ॥ तिम सुनंदा सुमंगला पासें, पणमुं धन ते लामी ॥ हुं० ॥ ६ ॥ मूल गंजारामां जिनमुद्रा, एकें ऊणी पचा-स जी ॥ रंगमंमपमां पमिमा एंशी, वंदो जाव उल्लासें ॥ हुं० ॥ ७ ॥ चैत्य उपर चोमुख थाप्यो छे, फिरती

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिमा बाणुं जी ॥ वली गौतम गणधरनी ठवणा, शी तारिफ वखाणुं ॥ हुं० ८ ॥ देहरा बाहेर फरती देहरी, चोपन रूमी दीसे जी ॥ तेहमां प्रतिमा एकशो त्र्याणुं, देखी हियडुं हींसे ॥ हुं० ॥ ए ॥ नीलडी रायण तरुवर हेठल, पीलडा प्रभुजीना पाय जी ॥ पूजी प्रणमी भावना भावी, ऊलट अंग न माय ॥ हुं० ॥ १० ॥ तस पद हेठल नागमोरनी, मूरति बेहु सोहावे जी ॥ तस सुरपदवी सिद्धाचलना, माहात्म्य मांहे कनोवे ॥ हुं० ॥ ११ ॥ साहमां पुंडरिक स्वामी बिराजे, प्रतिमा, बत्रीश गेजी ॥ तेहमां एक बौद्धनी प्रतिमा, टाली नमिये रंगे ॥ हुं० ॥ १२ ॥ तिहांथी बाहिर उत्तर पासें, प्रतिमा तेर देदारु जी ॥ एक रूपानी अवर धातुनी, पंच तीरथ ढे वारू ॥ हुं० ॥ ॥ १३ ॥ उत्तर सन्मुख गखधर पगलां, चउदसया बावननां जी ॥तेहमां शांति जिणंद जुहारी, पूग्या कोड ते मनना ॥ हुं० ॥ १४ ॥ दक्षिण पासें सहस कूटने, देखी पाप पलाय जी ॥ एक सहस्स चोवीश जिनेश्वर, संख्याये कहेवाय ॥ हुं० ॥ १५ ॥ दश क्षेत्रें मली

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्रीश चोवीशी, वली विहरमान विदेहें जी ॥ एकशो सीतेर उत्कृष्टे काले, संप्रति वीश स्नेहें ॥ हुं० ॥ ॥२६॥ पाठांतर ॥ दश क्षेत्रें मली त्रीश चोवीशी, एकशो शाठ विदेहें जी ॥ उत्कृष्टा विहरमान विभुजी, संप्रति वीश स्नेहें ॥ हुं० ॥ चोवीश जिननां पंच कल्याणिक, एकशो वीश संभारी जी ॥ शाश्वता चार प्रभु शरवाले, सहसकूट निरधारी ॥ हुं० ॥ १७॥ गोमुख यक्ष चक्केसरी देवी, तीरथनी रखवाली जी ॥ ते प्रभुनां पदपंकज सेवे, कहे अमृत निहाली हुं० १८ ॥ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ मुनिसुव्रतजिन अरज हमारी ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिशाथी जिनघर संख्या, जिनवरनी संज्ञ लावुं रे ॥ आतमथी उलखाण करीने, ते अहि गाण बतावुं रे ॥ त्रिभुवन तारण तीरथ वंदो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ रायणथी दक्षिणने पासे, देहरी एक जलेरी रे ॥ तेहमां चौमुख दोय जुहारु, टालुं भवनी फेरी रे ॥ त्रिभु० ॥ २ ॥ चोमुख सर्व मलीने बूटा, वीश संख्याये जाणो रे ॥ बुटी प्रतिमा आठ जुहारी, करी-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ये जन्म प्रमाणो रे ॥ त्रिजु० ॥ ३ ॥ संघवी मोती चंद पटणीनुं, सुंदर जिनघर सोहे रे ॥ तिहां प्रतिमा उंगणीश ऊहारी, हियडुं हरखित होये रे ॥ त्रजु० ॥ ॥ ४ ॥ श्रीसमेतशिखरनी रचना, कीधी बे नली नांते रे ॥वीश जिनेसर पगलां वंडू, बावीश जिन संघा- ते ॥ रे त्रिजु० ॥ ५ ॥ कुशलबाइनां चोमुखममांहे, सत्तर जिन सोहावे रे ॥ अचलगलना देहरामांहे बत्रीश जिनजी देखावे रे ॥ त्रजु० ॥ ६ ॥ शाह मूलाना मंरूपमांहे, बेतालीश जिनंदो रे ॥ चोवीशवट्टो एक तिहां बे,प्रणम्ये परमानंदो रे ॥ त्रिजु० ॥ ७ ॥ अष्टा पद मंदिरमां जइने, अवधि दोष तजीशरे ॥ चार आठ दश दोय नमीने, बीजा जिन चालीश रे ॥ त्रिजु० ॥ ॥ ८ ॥ शेठजी सूरचंदनी देहरीमां, नव जिन पमिमा ढाजे रे ॥ घीआ कुंअरजीनी देहरीमां, प्रतिमा त्रएय बिराजे रे ॥ त्रिजु० ॥ ए ॥ वस्तुपालना देहरामांहे थाप्या रुषन जिणंद रे ॥ काउस्सग्गिया बे एकत्रीश जिनवर, शंघवी ताराचंद रे ॥ त्रजु० ॥ १० ॥ मेरु शिखरनी ठमणामध्ये, प्रतिमा बार नलेरी रे ॥ ना-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

णा लींबडीयानी देहरीमां, दश प्रतिमा जोउं हेरी रे ॥ त्रिजु० ॥ ११ ॥ संघवी ताराचंद देवल पासे, देहरी त्रण्य छे अनेरी रे ॥ तेहमां दश जिनप्रतिमा निरखी, थिर परिणीत थइ मेरी रे ॥ त्रिजु० ॥ १२ ॥ पांच जाइ याना देहरामांहे, प्रतिमा पांच छे महोटी रे ॥ बीजी तेत्रीश जिन पडिमा छे, एह वात नहिं खोटी रे ॥ त्रिजु० ॥ १३ ॥ अमदावादीनुं देहरुं कहियें, तेहमां प्रतिमा तेर रे ॥ ते पठवाडे देहरीमांहे, प्रणमुं आठ सवेर रे ॥ त्रिजु० ॥ १४ ॥ शेठ जगन्नाथ जीयें कराव्युं, जिनमंदिर जले जावें रे ॥ तेहमां नव जिनपडिमा वंदी, कवि अमृत गुण गावे रे ॥ त्रिजु० ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ तुमें पीला पीतांबर पहेरयां जी, मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥

॥ रायणथी उत्तर पासें जी, तीरथना रसीया ॥ जिनवर जिनघर उल्लासें जी ॥ मुज हियडे वसीया ॥ ए आंकणी ॥ सहु जाखुं जोइ शिर नामी जी ॥ ती० ॥ मुऊ मनना अंतरजामी जी ॥ मु० ॥ १ ॥ जिनमुद्रायें कृषन जिणंदो जी ॥ ती० ॥ तिम जरत बाहुवलि वं-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दो जी ॥ मु० ॥ नमि विनमी काउस्सग्गिया सामा जी॥ ती० ॥ ब्राह्मी सुंदरी एक देहरीमां जी ॥ मु० ॥ २ ॥ पक्ष कृष्ण शुकल ब्रह्मचारी जी ॥ ती० ॥ शेठ विजय ने विजया नारी जी ॥ मु० ॥ एहवा कोइ न हूआ अवतारी जी ॥ ती० ॥ जाउं तेहनी हुं बलिहारी जी ॥ मु० ॥ ३ ॥ गछ अंचल चैत्य कहावे जी ॥ ती० ॥ वीशपडिमा वंदू नावें जी ॥ मु० ॥ तस मंडप थंना मांहिजी ॥ ती० ॥ चौद पडिमा वंदू त्यांहि जी ॥ मु० ॥ ४ ॥ नूषणदासनां देहरामांहे जी ॥ ती० ॥ तेर पडिमा थापी उत्साहें जी ॥ मु० ॥ वाछरडां मंगल खंनाती जी ॥ ती० ॥ तस चैत्यमां त्रण्य सोहाती जी ॥ मु० ॥ ५ ॥ शाकर बाइनी देहरीयें वंदो जी ॥ ती० ॥ सात प्रतिमा निरखी आणंदो जी ॥ मु० ॥ तिहांथी वली आगल चालो जी ॥ ती० ॥ माता विसोतनुं देहरुं नालो जी ॥ मु० ॥ ॥ ६ ॥ पण ते वस्तुपाले कराव्युं जी ॥ ती० ॥ आठ प्रतिमाये सोहाव्युं जी ॥ मु० ॥ ते उपर चोमुख राजे जी ॥ ती० ॥ चार शाश्वता जिन बिराजे जी० ॥ मु० ॥ ॥ ७ ॥ उगमणी बे छे देहरी जी ॥ ती० ॥ जितपडिमा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अग्यार जलेरी जी ॥ मु० ॥ शा हेमचंदनी दखणाती जी ॥ ती० ॥ देहरीमां जोमी सोहाती जी ॥ मु० ॥८॥ शा-रामजी गंधारीयें कीधो जी ॥ ती० ॥ प्रासाद उत्तंग प्रसिद्धो जी ॥ मु० ॥ तिहां चौमुख देखी आणंदुं जी ॥ ती० ॥ सात प्रतिमा साथे वंदुं जी ॥ मु० ॥ ए ॥ खट देहरी छे तस संगें जी ॥ती०॥ जिन नमीयें त्रैंतालीश रंगें जी ॥ मु० ॥ तिहां चोवीश जिननी मांमी जी ॥ती०॥ जिनसंगें लेइने ठाहामी जी ॥ मु० ॥ १० ॥ मूलकोटनी जमतीमांहे जी ॥ ती० ॥ फिरती छे चार दिशायें जी ॥मु०॥ पांचशे समशठ सुखकंदो जी ॥ ती० ॥ फिरता सघले जिन वंदो जी ॥ मु० ॥ ११ ॥ मूलकोटनां चैत्य निहाले जी ॥ ती० ॥ एकशो पां-शठ सरवाले जी ॥ मु० ॥ तिहां प्रभु सगवीससें वंदो जी ॥ती०॥ कहे अमृत ते चिर नंदो जी ॥ मु०॥१२॥

॥ ढाल पांचमी ॥ वात करो वेगला रही ॥
विशरामी रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे हाथीपोलनी बाहेरे ॥ विशरामी रे ॥ बे गोंखे छे जिनराज ॥ नमुं शिर नामी रे ॥ तेहथी द-

क्षिण श्रेणीयें ॥ वि० ॥ कहुं जिनघर जिननो साज ॥ न० ॥१॥ कुमर नरिंदें करावीयो ॥ वि० ॥ धन खरची सार विहार ॥ न० ॥ बावन शिखरें वंदियें ॥ वि० ॥ तिहोत्तर जिन परिवार ॥ न० ॥ २ ॥ वली धनराजने देहरे ॥ वि० ॥ प्रतिमा वंदुं सात ॥ न० ॥ देहरे वर्द्ध मान शेठने ॥ वि० ॥ प्रतिमा सात विख्यात ॥ न० ॥ ॥३॥ शाह रवजी राधणपुरी ॥ वि० ॥ तेहनुं जिन घर जोय ॥ न० ॥ तिहां पन्नर जिन दीपता ॥ वि० ॥ प्रणमी पातक धोय ॥ न० ॥ ४ ॥ तेहनी पासें राजता ॥ वि० ॥ मंदिरमां जिन चार ॥ न० ॥ तिहांथी आगल जोइयें ॥ वि० ॥ अद्भुत रचना सार ॥ न० ॥ ५ ॥ जगतशेठजीयें कीयो ॥ वि० ॥ त्रण्य शिखरो प्रासाद ॥ न० ॥ तिहां पन्नर जिन पेखतां ॥ वि० ॥ मुझ परिणति हुइ आल्हाद ॥ न० ॥ ६ ॥ पासें चुवन जिनराजनुं ॥ वि० ॥ तिहां खट् प्रतिमा धार ॥ न० ॥ मूर्त्ता ऊतारी कीयो ॥ वि० ते हीर बाईयें सार ॥ न० ॥ ७ ॥ कुंअरजी लाधा तणुं ॥ वि० ॥ दीपे देवल खास ॥ न० ॥ तेत्रीश जिनशुं था-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पीया ॥ वि० ॥ सहस्स फणा श्रीपास ॥ न० ॥ ७ ॥
विमलवसहियें चैत्य छे ॥ वि० ॥ जूउं जूलवणीमां
चार ॥ न० ॥ वली जमतो चोमुख बे मला ॥ वि० ॥
तिहां एक्याशी जिनद्वार ॥ न० ॥७॥ नेमीश्वर चोरी
जिहां ॥ वि० ॥ तिहां एकसो सीतेर देव ॥ न० ॥ मूल
नायकशुं वंदीयें ॥ वि० ॥ वली लोकनाल ततखेव ॥ न०
॥ १० ॥ विमलवसही पासें अछे ॥ वि० ॥ देहरा दो-
य निहाल ॥ न० ॥ प्रतिमा आठ जुहारीयें ॥ वि० ॥
आतम करी उजमाल ॥ न० ॥ ११ ॥ पुण्य पापनुं
पारखुं ॥ वि० ॥ करवाने गुणवंत ॥ न० ॥ मोक्षबारी
नामें अछे ॥ वि० ॥ तिहां पेसी निकलो संत ॥ न०
॥ १२ ॥ तीरथनी चोकी करे ॥ वि० ॥४॥ वली संघतणी
रखवाल ॥ न० ॥ करमशाहें थापीया ॥ वि० ॥
सहु विघ्न हरे विसराल ॥ न० ॥ १३ ॥ सघले अंगें
शोजता ॥ वि० ॥ जूषण ऊाकजमाल ॥ न० ॥ चर
णा चोली पेहेरणे ॥ वि० ॥ शोहे घाटमी लाल गु-
लाल ॥ न० ॥ १४ ॥ चतुर्जुजा चक्केसरी ॥ वि० ॥
तेहना प्रणमी पाय ॥ न० ॥ संघ सकल उलग करे ॥

वि० ॥ बुध अमृत नर गुण गाय ॥ न० ॥ १५ ॥

॥ ढाल छठी ॥ नवि तुमें वंदो रे, शंखेश्वर जिनराया ॥ ए देशो ॥

॥ नवि तुमें सेवो रे, उं जिनवर उपगारी ॥ को नहिं एहवो रे, तीरथमां अधिकारी ॥ ए आंकणी ॥ हाथी पोलथी उत्तरश्रेणें, जिनघर जिनजी छाजे ॥ समव सरण सुंदर छे तेहमां, प्रतिमा चार विराजे ॥ नवि० ॥ १ ॥ समवसरण पछवाडे देहरी, आठ अनोपम सोहे ॥ वीश जिनेसर तेहमां बेठ, नवियणनां मन मोहे ॥ नवि० ॥ २ ॥ रत्नसिंह भंमारी जेणें, कीधुं देवल खास ॥ तिहां जिन चार संघातें थाप्या, विजय चिंतामणि पास ॥ नवि० ॥ ३ ॥ तेहनी पासें चार छे देहरी, तिहां जिनपडिमा वीश ॥ प्रेमजी वेलजी शा हने देहरे, प्रणमुं पांच जगीश ॥ नवि० ॥ ४ ॥ नथ मल आणंदजीयें कीधुं, जिनमंदिर सुविशाल ॥ तिहां जइ पांच जिनेसर भेटे, मेटे नवजंजाल ॥ नवि० ॥ ५ ॥ वधुशा पटणीने देहरे, अष्टादश जिनराया ॥ पासें देहरी चिनाइ बिंबनी, देश बंगाल कहाया ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नवि० ॥ ६ ॥ अति अद्भुत जिनमंदिर रूडुं, लाधा वहोरा केरुं ॥ तेहमां जे षट् प्रतिमा वंदे, तेहनुं भाग्य भलेरुं ॥ नवि० ॥ ७ ॥ शा मीठाचंद लाधा जाणुं, पाटण शहेरना वासी ॥ जिनमंदिर सुंदर करि पमिमा, पांच ठवी छे खासी ॥ नवि० ॥८॥ सुणोत जयमल्लजीने देहरे, चोमुख जश्ने जुहारुं ॥ प्रतिमा दोय दिगंबर भुवनें, निरखी नांखुं सारुं ॥ नवि० ॥ ॥ ए ॥ ऋषन मोदीयें प्रासाद कराव्यो, तिहां दश पमिमा वंदो ॥ राजसी शाहनां देहरामांहे, भेट्या शांति जिणंदो ॥ नवि० ॥१०॥ तिरथ संघ तणो रख बालो, यक्ष कपर्दी कहियें ॥ बीजी मात चक्केसरी वंदी, सुख संपत्ति सहु लहियें ॥ नवि० ॥ ११ ॥ न्हानां महोटां भुवन मलीने, बहेंतालीश अवधारो ॥ संख्यायें जिनजीनी पमिमा, पांचशें शोल जुहारो ॥ नवि० ॥ १२ ॥ इणीपरें सघलां चैत्य नमीने, नाही सूरजकुंम ॥ जयणायें शुचि अंग करीने, पहेरो वस्त्र अखंम ॥ नवि० ॥ १३ ॥ विधिपूर्वक सामग्री मेली, बहु उपचार संघातें ॥ नाजिनंदन पूजी सहु पूजो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जिनगुण अमृत गाते ॥ नवि० ॥ १४ ॥ इति प्रथम टुंक प्रतिमासंख्या ॥

॥ ढाल सातमी ॥ भरतनृप भावशुं ए ॥ ए देशी ॥

॥ बीजी टुंक जुहारीयें ए, पावनीयें चढी जोय ॥ नमो गिरिराजने ए ॥ आंकणी ॥ पहेलां ते अद बुद देखीने ए, मुऊ मन अचरिज होय ॥ नमो० ॥ ॥ १ ॥ तिहांथी आगल चालतां ए, देहरी एक निहाल ॥ नमो० ॥ तेह गामें जइ वंदीयें ए, पासजी शांति कृपाल ॥ नमो० ॥२॥ खोमीयार कुंभनी उपरें ए, कीधो प्रासाद उत्तंग ॥ नमो० ॥ संघवी प्रेमचंद लवजीयें ए, निजधन खरची उमंग ॥न०॥३॥ गोख सटावट कोरणी ए, उन्नत रचना जास ॥ न० ॥ ध्वज कलशें करी शोहतो ए, दीपे जेम कैलास ॥ न० ॥ ४ ॥ तपगछ नायक दिनमणि ए, विजयजिनेंद्र सूरिंद ॥ न० ॥ अठाणुं जिन परिवारशुं ए, थाप्या कृषन जिणंद ॥ ॥ नमो० ॥ ५ ॥ संघवी प्रेमचंदें करयो ए, जिन मंदिर सुखकार ॥ नमो० ॥ सर्वतोभद्र प्रासादमां ए, बिंब नवाणुं सार ॥ नमो० ॥६॥ शा हेमचंद लवजीयें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

करथो ए, देहरो तिहां शुभभाव ॥ नमो० ॥ बिंब प-
चवीश तिहां वंदीयें ए, भवोदधि तारण नाव ॥ नमो॥
॥७॥ पाठांतर ॥ संघवी हेमचंदने देहरे ए, तेत्रीश जि-
नवर हार ॥ न० ॥ वंदी परमानंदथी ए, सफल करयो
अवतार ॥ न० ॥ आगल पांभव वंदीयें ए, पांच रह्या
काउस्सग्ग ॥ नमो० ॥ कुंता माता द्रोपदी ए, गुणम
णिनां ते वग्ग ॥ नमो० ए ॥ खरतरवसहीनी बारीयें
ए, पहेलुं शांतिभवन्न ॥ नमो० ॥ बहुतेर जिनशुं
वंदीये ए, चोवीश वट्टा त्रन ॥ नमो० ॥ १० ॥ पासें
पास जिनेसरु ए, बेठा भुवन मझार ॥ नमो० ॥ चो०
वीशवट्टो एक तेहमां ए, साधुमुद्रा दोय धार ॥ नमो०
॥ ११ ॥ तेहमां नंदीश्वर थापना ए, बावन जिन परी
वार ॥ नमो० ॥ अवधि आशातना टालीने ए, बिंब
उगण्यासी जुहार ॥ नमो० ॥ १२ ॥ एके जिन घरमां
थापीया ए, सीमंधर जिनराय ॥ नमो० ॥ प्रतिमा
चारशुं वंदीयें ए, परिणति शुद्ध ठहराय ॥ नमो० ॥
॥ १६ ॥ त्रण जिनरायशुं भुवनमां ए, बेठा श्रीअजित
जिणंद ॥ नमो० ॥ पासें मात चक्केसरी ए, अष्टभुजा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ते अमंद ॥ नमो० ॥ १४ ॥ चौमुख त्रण छे तेहनी ए, प्रतिमा वंदो बार ॥ नमो० ॥ रायणतले चउपादिका ए, तिहां एक पगीमा सार ॥ नमो० ॥ १५ ॥ गण धर पाउका वंदीयें ए, चउदसयां बावन्न ॥ नमो० ॥ पासें बे देहरी दीपती ए, कीधी धन्य ते जन्न ॥ नमो० ॥ १६ ॥ शा हेमचंद शिखरें कीयो ए, जिनमंदिर सुविलास ॥ नमो० ॥ तिहां त्रण पगिमायें नमुं ए, श्री मनमोहन पास ॥ नमो० ॥ १७ ॥ आमन साहामा छे देहरां ए, श्रीशांतिनाथना दोय ॥ नमो० ॥ एकमां प्रतिमा त्रएय नमुं ए, बीजे पचाश तुं जोय ॥ नमो० ॥ १८ ॥ मूलकोटमांहे दक्षिण दिशें ए, देहरी त्रएय छे जोम ॥ नमो० ॥ तिहा प्रतिमा खट्ट वंदीयें ए, कहे अमृत मद मोम ॥ नमो० ॥ १९ ॥

॥ ढाल आठमी । तपशुं रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ उत्तर पूरव वचले आगें, देहरी त्रएय सोहावे रे ॥ हरखीने ते थानक फरसे, वरसी समता आवं ॥ एहनें सेवोने, हांरे तुमें सेवो सहु नर नार ॥ एहने० ॥ एतो सेवो इण संसार ॥ एह० ॥ एतो भवजलतारण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हार ॥एहने०॥ ए आंकणी ॥१॥ तेहमां थावच्चा सुत सेलग, सूरि प्रमुख सुखदायी रे ॥ इणगिरि सीधा तेहनां पगलां, वंदुं सस्स अढाइ ॥ एहने० ॥ २ ॥ पासें विहार उत्तंग विराजे, रंगमंरुप दिशि चार रे ॥ शेठ शिवासोमजीयें कराव्यो, खरची वित्त उदार ॥ एहने० ॥ ३ ॥ अनंत चतुष्टय गुण निपज्याथी, सरखां चारे रूप रे ॥ परमेश्वर शुन्न समयें थाप्या, चारे दिशायें अनूप ॥ एहने० ॥ ४ ॥ ते श्री रुषन्न जिनेश्वर चौमुख, बीजा जिन त्रेताल रे ॥ शुरूनिमित्त कारण लही एहवां, हुं प्रणमुं त्रएय काल ॥ एहने० ॥ ॥ ५ ॥ उपर चोमुख चवीश जिनशुं, देखी दुरित निकंदुं रे ॥ चोवीश वट्टो एक मलीने, चोपन प्रतिमा वंदुं ॥ एहने० ॥ ६ ॥ साहमा पुंमरिक स्वामी बेठा, पुंमरिकवर्णा राजे रे ॥ तस पद वंदी जोडे देहरी, तेहमां थून्न विराजे ॥ एहने० ॥७॥ रुषन्न प्रन्नु ने पुत्र नवाणुं, आठ नरत सुत संगे रे ॥ एकशो आठ समय एक सीधा, प्रणमुं तस पद रंगं ॥ एहने० ॥ ८ ॥ फिरती नमतीमांहे प्रतिमा, एकशो ने बत्रीश रे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तेहमां चोवीश वट्टा साथें, एकशो साठ जगीश ॥ ॥ एहने० ॥ ए ॥ पोल बाहेर मरुदेवी टुंके, चोमुख एक प्रसिद्धो रे ॥ धनवेलबाइयें निज धन खरची, नरभव सफलो कीधो ॥ एहने० ॥ १० ॥ पश्चिमने मुखसाहमा शोहे, देवलमां मनोहारी रे ॥ गजवर खंधें बेठां आइ, तीरथनां अधिकारी ॥ एहने० ॥११॥ संप्रतिरायें जुवन कराव्युं, उत्तर सन्मुख सोहेरे ॥ तेह मां अचिरानंदन निरखी, कहे अमृत मन मोहे ॥१२॥ ॥ ढाल नवमी ॥ आठ कूवा नव वावरी, हुं शे मिषेंदे खण जाउं महाराज, दधिनो दाणी कानूडो ॥ ए देशी ॥

॥हवे ठीपावसहीमां वहाला, हांरे तुमे चालो चेतन लाला राज ॥ आज सफल दिन ए रूडो ॥ ए आंकणी ॥ जिनमंदिर जिन मूरति भेटो, नव नवनां पातक मेटो राज ॥ आज० ॥ १ ॥ तिहां पांच गंजारे जइ अटकलिया, मानुं पांच परमेष्ठी मलिया राज ॥ आ० ॥ रायणतले पगलां सुखदायी, तिहां रुषन प्रजुने गाई राज ॥ आ० ॥ २ ॥ नेमि जिनेश्वर शिष्य प्रवीणा, मुनि नंदिषेण नगीना राज ॥ आ० ॥ श्रीश

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्रुंजय भेटण आया, तिहां अजित शांति गुण गा-
या राज ॥ आ० ॥ ३ ॥ तेह तवन महिमाथी जोडे,
बिहुं जिनवर वंद्या कोडे राज ॥ आ० ॥ तेह
मंदिर बे जोडे निरखी, में भेट्या बेहु जिन हरखी
राज ॥ आ० ॥ ४ ॥ नयर रुनोइ तणो जे वासी,
मनुं पारेख धर्म अभ्यासी राज ॥ आ० ॥ तेणे जि-
नमंदिर कीधुं सारुं, तिहां त्रण्य प्रतिमाने जुहारुं रा-
ज ॥ आ० ॥ ५ ॥ एक भुवनमां त्रण्य जिन राजे,
बीजामां नेम विराजे राज ॥ आ० ॥ देवल एक देखी
दुरित निकंदुं, तिहां पास प्रभुने वंदुं राज ॥ आ०
॥ ६ ॥ बावन देहरी पाखल फरती, जिनमंदिर शोभा
करती राज ॥ आ० ॥ तेहमां अजित जिनेश्वर राया,
में प्रणमीनें गुण गाया राज ॥ आ० ॥ ७ ॥ न्हानां
महोटां भुवन निहाली, सगतीस गण्यां संभाली रा-
ज ॥ आ० ॥ संख्यायें जिनप्रतिमा भणीयें, पांचशें
नेव्याशी गणीयें राज ॥ आ० ॥ ८ ॥ ए तीरथमाला
सुविचारी, तुमें यात्रा करो हितकारी राज ॥ आ० ॥
दर्शन पूजा सफली थाये, शुभ अमृत भावें गाये

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राज ॥ आ० ॥ ए ॥

॥ ढाल दशमी ॥ मुने संभवजिनशुं प्रीत, अवि-
हड लागी रे ॥ ए देशी ॥

॥ तुमें सिद्धगिरिनां बेहु टूक, जोइ जूहारो रे ॥ तुमें मुख आदिनी मूक, ए भव आरो रे ॥ तुमें ध-
र्मी जीव संघात, परिणति रंगें रे ॥ तुमें करजो तीरथ यात्र, सुविहित संगें रे ॥ १ ॥ वावरजो एक वार, सचित्त सहु टालो रे ॥ करी पमिक्कमणां दोइ वार, पाप पखालो रे ॥ तुमें धरजो शील शृंगार, भूमि सं-
थारो रे ॥ अणवाणे पाय संचार, ठहरि पालो रे ॥ ॥ २ ॥ इम सुणी आगम रीत, हियडे धरजो रे ॥ करी सद्दहणा प्रतीत, तीरथ करजो रे ॥ आ दूषम कालें जोय, विघन घणेरां रे ॥ कीधुं ते सीधुं सोय, शुं छे सवेरां रे ॥ ३ ॥ ए हितशीक्षा जाण, सुगुणा हरखो रे ॥ वली तीरथनां अहिठाण, आगें निरखो रे ॥ देवकीना खट नंद, नमी अनुसरियें रे ॥ आतम शक्तें अमंद, प्रदक्षिणा करियें रे ॥ ४ ॥ पहेली उल खाजोल, भरी ते जलशुं रे ॥ जाणे केशरना झब

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कोल, नमणना रसशुं रे ॥ पूजे इंद्र अमोल, रयण पमिमाने रे ॥ ते जल आंख कपोल, ठवो शिर ठामें रे ॥ ५ ॥ आगल देहरी दोय, समीपे जाउं रे ॥ तिहां प्रतिमां पगलां दोय, नमि गुण गाउं रे ॥ वली चिह्नणातलावमी देख, मनमां धारुं रे ॥ तिहां सिद्धशिला संपेखि, गुण संजारुं रे ॥ ६ ॥ जाऊवे जवियणवृंद, आपण जाशुं रे ॥ जे थानकें अतीत जिणंद, रह्या चोमासुं रे ॥ जिहां सांब प्रद्युम्न मुनि रंग, थया अविनाशी रे ॥ ते धन्य कृतारथ पुण्य, शुणें गुण राशि रे ॥ ७ ॥ हुं तो सिद्धवम पगला साथ, नमुं हित काजें रे ॥ इहां शिवसुख कीधुं हाथ, बहु मुनिराजें रे ॥ इम चढतां चारे पाज, चउगति वारे रे ॥ ए तीरथ जग ऊहाज, जवजल तारे रे ॥ ८ ॥ जे जग तीरथ संत, ते सहु करियें रे ॥ पण ए गिरि जेटे अनंत, गणुं फल वरिये रे ॥ पुंमरिकादिक नाम, एकवीश लीजें रे ॥ जिम मनोवांछित काम, सघलां सीके रे ॥ ए॥ करिये पंच स्नात्र, रायण आदें रे ॥ तिम रूमी रथयात्र, प्रजु प्रसादें रे ॥ वली नवाणुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वार, प्रदक्षिणा फरिये रे ॥ स्वास्तिक दीपक सार, त्यां करीये रे ॥१०॥ पूजा विविध प्रकार, नृत्य बनावो रे ॥ इम सफल करी अवतार, गुणी गुण गावो रे ॥ निज अनुसारे शक्ति, तीरथ संगें रे ॥ तुमें साधु साहामी नक्ति, करजो रंगे रे ॥ ११ ॥ पालीताणुं धन्य धन्य ते प्राणी रे ॥ जिहां तीरथवासी जन्न, पुण्य कमाणी रे ॥ प्रह उगमते सूर, रुषन्नजी नेटो रे ॥ करि दक त्रिक आणंद पूर, पाप समेटो रे ॥ १२ ॥ जिहां ललितासर पाल, नमी प्रन्नु पगलां रे ॥ रुंगरन्नणी उजमाल, न्नरिये डगलां रे ॥ वचमां नूखण वाव्य, जोइने चालो रे ॥ तुमे गुण गातां शुन्न नाव, साथे माहलो रे ॥ १३ ॥ तुमे धूपघटी करमांहि, जूला देतां रे ॥ वनी गायामांहि, ताली लेता रे ॥ आवी तलेटी गाण, तनु शुचि करिये रे ॥ पूरव रीत प्रमाण, पढी परवरिये रे ॥ १४ ॥ इण परे तीरथमाला, नावे नणशे रे ॥ जिणे दीठुं नयण निहाल, विशेषे सुणशे रे ॥ लेशे मंगलमाल, कंठें जे धरशे रे ॥ वली सुख संपत्ति सुविशाल, महोदय वरशे रे ॥ १५ ॥ तपगन्न

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गयण दिणंद, रूपेंठाजे रे ॥ श्रीविजयदेव सूरिंद, अधिक दिवाजे रे ॥ रत्नविजय तस शिष्य, पंडित राया रे ॥ गुरुराज विवेक जगीश, तास पसाया रे ॥ १६ ॥ कीधो ऐह अन्यास, अढार चालीशे रे ॥ उज्ज्वल फागुण मास; तेरश दिवसे रे ॥ श्रीविमला चल चित्त, धरी गुण गाया रे ॥ कहे अमृत नवियण नित्य, नमो गिरिराया रे ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम तीर्थ माला, गुण विशाला, विमलगिरिवर, राजनी ॥ कही स्वपरहेते, पुण्य संकेते, एह जिनघर, साजनी ॥ तप गछ गयण, दिणंद गणधर, विजय जिणंद, सूरीश्वरू॥ रचि तास राजे, पुण्यसाजे, अमृत रंग, सुहंकरू॥१८॥ इति श्री विमलाचलतीर्थमाला संपूर्णा ॥

ए तीर्थमाला करया पठी प्रेमचंद मोदीनी टुंक, हेमावसही, मोतीशा शेठनी अंजनशिला का सहित तेमनी टुंक, बालाजाइनी टुंक,केशवजी नायकना अंजन शिलाका सहित देरासरादिक, जे कांइ ए तीर्थमालानी रचना थया पठी नवा जिनालय थया छे ते सर्वनी यात्रालु सज्जनोये यात्रा करवी, ए विनति छे.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ ॥

## ॥ पंमित श्रीवीरविजयजी कृत

## ॥ श्रीशत्रुंजय तीर्थना एकवीश नाम संबंधी एकवीश गुण आश्रयी एकवीश खमासमण आपवान दोहा प्रारंन्न ॥

१ सिद्धाचल समरो सदा, सोरठ देश मझार ॥ मणुष्य जनम पामी करी, वंदो वार हजार ॥ १ ॥ अंग वसन मन नूमिका, पूजोपगरण सार ॥ न्याय द्रव्य विधि शुद्धता, शुद्धि सात प्रकार ॥ २ ॥ कार्तिकशुदि पूनम दिनें, दश कोटी परिवार ॥ द्राविम वारी खिल्लजी, सिद्ध थया निर्धार ॥ ३ ॥ तिण कारण कार्त्तिकी दिने, संघ सकल परिवार ॥ आदिजिन सन्मुख रही, खमा समण बहु वार ॥ ४ ॥ एकवीश नामें वर्णव्युं, तिहां पहेलुं अन्निधान ॥ शत्रुंजय शुकरायथी, जनक वचन बहु मान ॥५॥ अहींयां "सिद्धाचल समरो सदा" ए दुहो प्रत्येक खमामण दीठ कहेवो ॥ १ ॥

२ समोससरया सिद्धाचलें, पुंमरीक गणधार ॥ लाख सवा माहातम कर्युं, सुर नर सन्ना मझार ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चैत्री पूनमने दिने, करि अणसण एक मास ॥ पांच कोमी मुनि साधुशुं, मुक्तिनिलयमां वास ॥ ७ ॥
तिणे कारण पुंमरिकगिरि, नाम थयुं विख्यात ॥ मन वच कायें वंदीयें, ऊठी नित्य प्रज्ञात ॥ ८ ॥ सि०

३ वीश कोमीशुं पांमवा, मोक्ष गया ईणे ठाम ॥ इम अनंत मुक्तें गया, सिद्धक्षेत्र तिणें नाम ॥ ए ॥ सि० ॥

४ अमशठ तीरथ न्हावतां. अंगरंग घमी एक ॥ तुंबीजलस्नानें करी, जाग्यो चित्तविवेक ॥ १० ॥
चंद्रशेखर राजा प्रमुख, कर्मकठिन मलधाम ॥ अचल पदें विमला थया, तिणे विमलाचल नाम ॥ ११ ॥ सि० ॥

५ पर्वतमां सुरगिरी वमो, जिन अभिषेक कराय ॥ सिद्ध हुआ स्नातकपदें, सुरगिरि नाम धराय ॥ १२ ॥
अथवा चउदे क्षेत्रमां, ए समो तीर्थ न एक ॥ तिणे सुरगिरिनामें नमुं, जिहां सुरवास अनेक ॥ १३ ॥ सि० ॥

६ अयसी योजन पृथुल छे, उंचपणे छवीश ॥ महिमा ए महोटो गिरि, महागिरि नाम नमीश ॥ १४ ॥ सि० ॥

७ गणधर गुणवंता मुनि, विश्वमांहे वंदनीय ॥ जेहवो तेहवो संयमी, विमलाचल पूजनीय ॥ १५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विप्र लोक विषधर समा, दुःखीया भूतल मान ॥ द्रव्य लिंगी कण क्षेत्र सम, मुनिवर द्वीप समान ॥ १६ ॥ श्रावक मेघ समा कह्या, करता पुण्यनुं काम ॥ पुण्य नो राशि वधे घणो, तेणें पुण्यराशि नाम ॥१७॥ सि०॥

८ संयमधर मुनिवर घणा, तप तपता एक ध्यान ॥ कर्म वियोगें पामीया, केवल लक्ष्मी निधान ॥१८॥ लख एकाणुं शिव वरया, नारदशुं अणगार ॥ नाम नमो तेणें आठमुं, श्रीपद्गिरि निर्धार ॥ १९ ॥ सि० ॥

९ श्रीसीमंधर स्वामीयें, ए गिरि महिमाविलास ॥ इंद्रनी आगें वर्णव्यो, तेणें ए इंद्रप्रकाश ॥ २० ॥ सि० ॥

१० दश कोटि अणुव्रत धरा, भक्ते जिमाडे सार ॥ जैनतीर्थ यात्रा करी, लाभ तणो नहिं पार ॥ २१ ॥ तेहथकी सिद्धाचलें, एक मुनिने दान ॥ देतां लाभ घणो हुवे, महातीरथ अभिधान ॥ २२ ॥ सि० ॥

११ प्रायें ए गिरि शाश्वतो, रहेशे काल अनंत ॥ शत्रुंजय महातम सुणी, नमो शाश्वतगिरि संत ॥२३॥सि०॥

१२ गो नारी बालक मुनि, चउद हत्या करनार ॥ यात्र करतां कार्तिकी, न रहे पाप लगार ॥ २४ ॥ जे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

परदारा लंपटी, चोरीना करनार ॥ देवद्रव्य गुरु द्रव्य ना, जे वली चोरणहार ॥ २५ ॥ चैत्री कार्तिक पूनमें, करे यात्रा इण ठाम ॥ तप तपतां पातक गले, तिणे दृढशक्ति नाम ॥ २६ ॥ सिद्धा० ॥ १२ ॥

१३ नवनय पामी नीकल्या, थावच्चासुत जेह ॥ सहस्स मुनिशुं शिव वरया, मुक्ति निलयगिरि तेह ॥ ॥ २७ ॥ सिद्धा० ॥ १३ ॥

१४ चंदा रज बिहुं जणा उन्ना इणे गिरिशृंग ॥ करी वर्णवने वधावियो, पुष्पदंत गिरिरंग ॥२८॥ सि०॥

१५ कर्मकलण नवजल तजी, इहां पाम्या शिवसद्म ॥ प्राणी पद्मनिरंजनी, वंदो गिरि महापद्म ॥२९॥सि०॥

१६ शिववहू विवाह उत्सवें, मंरुप रचियो सार ॥ मुनिवर वर बेठक नणी, पृथ्वीपीठ मनोहार ॥३०॥सि०

१७ श्रीसुनडगिरि नमो, नड ते मंगलरूप ॥ जल तरु रज गिरिवर तणी, शीश चढावे नूप॥ ३१ ॥सि०॥

१८ विद्याधर सुर अप्सरा, नदी शत्रुंजी विलास ॥ करता हता पापने, नजीयें नवि कैलास ॥३२॥ सि०॥

१९ बीजा निर्वाणी प्रभु, गइ चोवीशी मझार ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तस गणधर मुनिमां वरा, नामे कदंब अणगार ॥३३॥ प्रभु वचनें अणसण करी, मुक्ति पुरीमां वास ॥ नामें कंदगिरि नमो, तो होय लील विलास ॥३४॥ सि०॥

३० पातालें जस मूल छे, उज्ज्वलगिरिनुं सार ॥ त्रिकरण योगें वंदतां, अल्प होय संसार ॥३५॥ सि० ॥

३१ तन मन धन सुत वल्लभा, स्वर्गादिक सुख भोग॥ जे वंछे ते संपजे, शिवरमणी संयोग ॥ ३६ ॥ विमलाचल परमेष्ठीनुं, ध्यान धरे खट मास ॥ तेज अपूरव विस्तरे, पूगे सघली आश ॥ ३६ ॥ त्रीजे भव सिद्धि लहे, ए पण प्रायिक वाच ॥ उत्कृष्टा परिणामथी, अंतर मुहूरत साच ॥ ३८ ॥ सर्व कामदायक नमो, नाम करी उलखाण ॥ श्रीशुभवीरविजय प्रभु, नमतां कोडि कल्याण ॥ ३९ ॥ सिद्धा० ॥ ३१ ॥ इति श्रीसिद्धाचलनां एकवीश नाम आश्रयी एकवीश गुणना खमासमण संबंधी दोहा समाप्त ॥

---

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥

॥ विमल केवल, ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकरं ॥ सुरराज संस्तुत, चरण पंकज, नमोऽथा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दिजिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर, शृंग मंरुन, प्रवर गुणगण, भूधरं ॥ सुर असुर किन्नर, कोरि सेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करति नाटिक, किन्नरीगण, गाय जिन गुण, मनहरं ॥ निर्ज्जरावलि नमे अहनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंरुरिक गणपति, सिद्धि साधी, कोरी पण मुनि, मनहरं ॥ श्री विमल गिरिवर,शृंगसिद्धा ॥ न मो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन, सुर मुनिवर, कोरी नंत ए, गिरिमरं ॥ मुक्ति रमणी, वरया रंगें ॥ नमो०॥ ॥ ५ ॥ दाताल नर सुर, लोकमांहे, विमल गिरिवर तो परं ॥ नहिं अधिक तीरथ, तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर, शिखर मंरुण, दुःखविहं रुण, ध्याइयें ॥ निजशुरु सत्ता, साधनार्थे, परम ज्यो तिने, पाइयें ॥ ७ ॥ जित मोह कोह, विछोह निद्रा, परमपदस्थित, जयकरं ॥ गिगराज सेवा, करण तत्पर, पद्मविजय, सुहितकरं ॥ ८ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदनं ॥

॥ सिरुाचल शिखरे चढो, ध्यान धरो जगदीश मन वच काय एकाग्रशुं, नाम जपो एकवीश ॥ १ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१ शत्रुंजयगिरि वंदीयें, २ बाहुबली गुणधाम ॥ ३ मरुदेव ने ४ पुंमरिकगिरि, ५ रेवतगिरि बिशराम ॥२॥ ६ विमलाचल ७ सिद्धाराजजी, नाम जगीरथ सार ॥ ए ॥ सिद्धक्षेत्र ने १० सहस्त्रकमल, ११ मुक्तिनिलय जयकार ॥ ३ ॥ १२ सिद्धाचल १३ शतकूटगिरि, १४ ढंक ने १५ कोडीनिवास १६ कदंबगिरि १७ लोहित नमो, १८ तालध्वज १ए पुण्यराशि ॥ ४ ॥ २० महावल २१ दृढशक्ति सही, ए एकवीशह नाम ॥ साते शुद्धि समाचरी, करीये नित्य प्रणाम ॥ ५ ॥ दग्ध शून्य ने अविधि दोष, अतिप्रवृति जेह ॥ चार दोष टंमी जजो, जक्तिजाव गुणगेह ॥ ६ ॥ मणुअ जन्म पामी करी ए, सद्गुरु तीरथ योग ॥ श्रीशुजवीरने शासने, शिवरमणी संयोग ॥ ७ ॥ इति चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ पुंमरगिरिस्तवन प्रारंजः ॥

॥ वीरजी आया रे विमलाचलके मेदान, सुरपति जाया रे, समवसरण मंमाण ॥ ए आंकणी ठे ॥ देशना देवे वीरजी स्वामि, शत्रुंजय महिमा वर्णवे ताम ॥ जांखे आट ऊपर सो नाम, तेहमां जांख्युं रे पुंमरगिरि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभिधान ॥ सोहम इंदो रे, तव पूछे बहु मान ॥ किम थयुं स्वामी रे, भांखो तास निदान ॥ वीर० ॥ १ ॥ प्रभुजी भाखे सांभल इंद, प्रथम जे हुआ ऋषभ जिणंद ॥ तेहना पुत्र ते भरत नरिंद, भरतना हुआ रे ऋषभसेन पुंडरिक ॥ ऋषभजी पासें रे, देशना सुणी तहकीक ॥ दीक्षा लीधी रे, त्रिपदी ज्ञान अधिक ॥वी०॥ ॥ २ ॥ गणधर पदवी पाम्या जाम, ब्रांदशांगी गुंथी अभिराम ॥ विशरे महियलमां गुण धाम, अनुक्रमें आव्या रे, श्रीसिद्धाचल सार ॥ मुनिवर कोमी रे, पंच तणे परिवार॥अनशन कीधुं रे; निज आतमने उपगार ॥ वीर० ॥ ३ ॥ चैत्री पूनम दिवसें एह; पाम्या केवल ज्ञान अछेह ॥ शिव सुख वरिया अमल अदेह, पूर्णानंदी रे, अगुरु लघु अवगाह ॥ अज अविनासी रे, निजगुण भोगी अबाह ॥ निज पुण करता रे, पर पुद्गल नहिं चाह ॥ वीर० ॥ ४ ॥ तेणे प्रगट्यो पुंडरिकगिरि नाम, सांभलो सोहम देवलोक स्वाम ॥ एहनो महिमा अतिहि उद्दाम, इणे दिन कीजेंरे, तप जप पूजा ने दान ॥ व्रत वली पोसो रे, जेह करे नि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दान ॥ फल तस पामे रे, पंच कोमी गुण मान ॥ वीर० ॥ ५ ॥ जक्तें जव्य जीव जे होय, पंच जवें मुक्ति लहे सोय ॥ तेहबां बाधक ठे नहिं कोय, व्यव हार केरी रे, मध्यम फलनी ए वात ॥ उत्कृष्टें नोगें रे, अंतरमुहूर्त्त विख्यात, शिव सुख साधे रे, निज आतम ने अवदात ॥ वीर० ॥ ६ ॥ चैत्री पूनम महिमा देख, पूजा पंच प्रकार विशेष ॥ कीजें नहिं ऊणमी कांइ रेख, इणीपरें नांखे रे, जिनवर उत्तम वाण ॥ सांजली ब्रू ऊया रे, केइक जविक सुजाण ॥ इणीपरें गाया रे पद्म विजय सुप्रमाण ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अथ श्री शत्रुंजयस्तुतिः ॥

॥ श्री शत्रुंजय मंमण, रुषन जिणंद दयाल ॥ मरुदेवा नंदन, वंदन करुं त्रएय काल ॥ ए तीरथ जाणी, पूर्व नवाणुं वार ॥ आदीश्वर आव्या, जा णी लान अपार ॥ १ ॥ त्रेवीश तीर्थंकर, चरिमा इ णे गिरि जावें ॥ ए तीरथना गुण, सुर असुरादिक गावे ॥ ए पावन तीरथ, त्रिनुवन नहिं तस तोलें ॥ ए तीरथना गुण, सीमंधर मुख बोले ॥ २ ॥ पुंमरिक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गिरि महिमा, आगममां परसिद्ध ॥ विलाचल भेटी, लहियें अविचल ऋद्धि ॥ पंचमी गति पहोता, मुनिवर कोमाकोमि ॥ इण तीरथ आवी, कर्मविपाक विछोमा ॥३॥ श्रीशत्रुंजयगिरि, अहोनिश रक्षा कारी ॥ श्रीआदिजिनेश्वर, आण हृदयमां धारी ॥ श्रीसंघविघ्नहरः कवमियक्ष नरपूर ॥ श्रीसंघनां संकट, रवि बुध सागर चूर ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजयस्तुतिः ॥

॥ श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ सार, गिरिवरमांहे जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणुं, तारामांहे जेम चंद्र वखाणुं, जलधर मांहे जल जाणुं ॥ पंखीमांहे जेम उत्तम हंस, कुल मांहे जेम ऋषभनो वंश, नाभि तणो जे अंश ॥ क्षमावंतमांहे जेम अरिहंता, तपःशूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदा, सुमति नाथ मुख पूनमचंदा, पद्मप्रभ सुखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि, शीतल श्रेयांस सेवो बहुबुद्धि, वासुपूज्य मति शुद्धि ॥ वि-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मल अनंतजिन धर्म ए शांति, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनिसुव्रत शुद्ध पंथी ॥ नमि पास ने वीर चोवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्धगिरि आव्या ईस ॥२॥ जरतराय जिन साथें बोले, स्वामी शत्रुंजय गिरि कुण तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रुषज कहे सुणो जरतराय बहरी पलतां जे नर जाय, पातक जूको थाय ॥ पशु पंखी जे इमगिरि आवे, जव त्रीजे ते सिद्धज थावे, अजरामर पद पावे ॥ जिनमतमें शेत्रुंजो वखाएयो, ते में आगम दिलमांहे आएयो, सुणतां सुख उर आएयो ॥ ३ ॥ संघपति जरत नरेश्वर आवे, सोवन तणां प्रासाद करावे, मणिमय मूरति ठावे, ॥ नाजिराया मरुदेवी माता, ब्राम्ही सुंदरी बहेन विख्याता, मूर्ति नवाणुं त्राता ॥ गोमुखने चक्केसरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तप गह्न उपर हेवी, ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वरराया, श्रीविजयदेवसुरि प्रणमी पाया, रुषजदास गुण गाया ॥ ४ ॥

॥ श्रीशत्रुंजयनां एकवीश नाम कहीयें छैयें ॥

विमलगिरि मुक्तिनिलउ, शत्रुंजो सिद्धखित्त पुंमरि-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उं ॥ सिरी सिद्धसेहरउं, सिद्धपवउं सिद्धराउं अ ॥१॥ बाहुबली मरुदेवो, नगीरहो सहसपत्त सयवत्तो ॥ कूरु सयहुत्तरउं, नगाहिराउं सहस्सकमलो ॥ २ ॥ ढंको कउंकिनिवासो, लोहिच्चो तालुप्पउं कयंबुत्ति ॥ सुरनर मुणिकय नामो, सो विमलगिरि जयउ तिहुं ॥ ३ ॥

अर्थः—१ प्रथम जेने वांदवाथी, फरसवाथी, पूजवाथी तथा गुणस्तुति करवाथी, जीव कर्ममल रहित थाय विमल थाय तेथी ए तीर्थनुं नाम विमलगिरि जाणवुं.

२ श्रीभरतचक्रवर्त्तीथी आठ पाट आरीशा भुवनमां केवल ज्ञान पामी मोक्ष पद पामशे माटे मुक्तिनिलय नाम

३ जितारि राजा, ए तीर्थ सेवी ॥ ७ मास आयंबिल तप करी शत्रुने जीतशे माटें शत्रुंजय नाम जाणवुं.

४ ए तीर्थ उपरे कांकरे कांकरे अनंता जीव सिद्धि वरया छे, माटें (सिद्धखित्त के०) सिद्धक्षेत्र नाम जाणवुं.

५ हे पुंडरिकगधर ॥ तमे चैत्रशुदि पूनमने दिवसें. पांच कोडी मुनियो सहित सिद्धि पामशो अथवा सर्व तीर्थरूप कमलमां पुंडरिक कमल समान सर्वोत्तम ए तीर्थ छे माटे एनुं पुंडरिकगिरी नाम जाणवुं.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

६ बीजां सर्व तीर्थ तथा अढी द्वीपने विषे जेटला जीव सिद्धिने पाम्या, तेथी पण घणा जीवो आ तीर्थने विषे सिद्धिने पाम्या, छे, माटें श्रीसिद्धशेखर नाम छे.

७ सर्व तीर्थोथकी तथा सर्व पर्वतोथकी ए पर्वत प्रसिद्ध छे माटे एनुं सिद्धपर्वत एवुं नाम जाणवुं.

८ घणा राजाउं केवलज्ञान पामी ए तीर्थने विषे सिद्धि पाम्या माटे एनुं सिद्धराज एवुं नाम जाणवुं

९ श्री बाहुबल ऋषीश्वरे काउस्सग्ग करयो माटे एनुं ( बाहूबलि के० ) बाहुबलि एवुं नाम जाणवुं

१० श्री ऋषभदेवनी माता मरुदेवाजीनी टुंक ए तीर्थ उपर छे माटे एनुं (मरुदेवो के०) मरुदेव नाम छे.

११ ए तीरथनी रक्षा करवा सारु इंद्रना कहेवा थकी सगरचक्रवर्त्ती, समुद्रनी खाइ लाव्या, तेथी एनुं ( जगीरहो के० ) जगीरथ एवुं नाम जाणवुं.

१२ ए पर्वतनी पठवाडे सहस्त्रकूट छे माटे एनुं ( सहस्सपत्त के० ) सहस्त्रपत्र एवुं नाम जाणवुं.

१३ ए पर्वतनी पठवाडे सेवंत्रानी टुंक छे, माटें एनुं ( सयवत्तो के० ) सयवत्तो एवुं नाम जाणवुं.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१४ ए पर्वतनी पुंठे एकशो आठ कूट अथवा शिखर छे, माटे एनुं अष्टोत्तरशतकूट एवुं नाम जाणवुं.

१५ बीजा सर्व पर्वतोमां ए पर्वत राजा समान छे माटे तेनुं (नगाहिराउ के०) नगाधिराज नाम जाणवुं.

१६ ए पर्वनी पुंठे कमलनी पेरें सेहस्र टुक छे माटे (सहस्सकमलो के०) सहस्रकमल नाम जाणवुं.

१७ ढंग नामे टूक छे माटे ढंकगिरि नाम जाणवुं

१८ कवरुनामा यक्षनुं देरासर छे, माटे एनुं (कउहनिवासो के०) कउहनिवास एवुं नाम जाणवुं.

१ए लोहितध्वज नामें पर्वत छे माटे एनुं (लोहिच्चो के०) लौहित्यगिरि एवुं नाम जाणवुं.

२० तालध्वज नामें पर्वत छे माटे एनुं (तालप्पो के०) तालध्वज एवुं नाम जाणवुं

२१ अतीत चोवीशीमां निर्वाणीनामा तीर्थंकर ना कदंब नामें गणधर कोरी मुनि साथें आ तीर्थनी टुंकें सिद्धि वरया, माटें कदंबगिरि एवुं नाम जाणवुं.

ए एकवीश नाम ते (सुरनरमुणिकय के०) देवता, मनुष्य तथा मुनियोना करया थका थया करशे, माटे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए तीर्थ ऋनकूटादिकनी परें प्रायःशाश्वतो छे. कालें करी घट वध थाय परंतु सर्वथा नाश न थाय (सो के०) ते विमलगिरि तीर्थ ( जयउ के० ) जयवंतो वर्त्तो.

॥ अथ ॥

## ॥ श्री सिद्धाचलजीनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री रिसहेसर पाय नमी, आणी मन आनंद ॥ रास जणुं रलियामणो, शत्रुंजय सुखकंद ॥ ॥ १ ॥ संवत् चार सत्योतरें, हुवा धनेसर सूरि ॥ तिणें शत्रुंजय महातम कह्युं, शीलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीरजिणंद समोसरया, शत्रुंजय उपर जेम ॥ इंद्रादिक आगल कह्युं, शत्रुंजय महातम एम ॥ ३ ॥ शत्रुंजय तीरथ सारिखुं, नही छे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तीरथ सघलां जोय ॥ ४ ॥ नामें नव निधि संपजे, दीठे दुरित पलाय ॥ भेटंतां भवभय टले, सेवंतां सुख थाय ॥५॥ जंबूनामें द्वीप ए, दक्षिण भरत मझार ॥ सोरठ देश सोहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल पहेली ॥ नयरी द्वारामती ॥ ए देशी ॥

॥ राग रामग्री ॥

॥ शत्रुंजय ने श्रीपुंमरिक, सिद्धक्षेत्र कहुं तहकीक ॥ विमलाचलने करुं प्रणाम, ए शत्रुंजानां एकवीश नाम ॥१॥ ए आंकणी ॥ सुरगिरि महागिरि ने पुण्यराशि, श्री पद पर्वतेंद्र प्रकाश ॥ महातीरथ पूरवें सुखकाक, ए शत्रुजानां एकवीश नाम ॥ २ ॥ शाश्वतपर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो तेणें कीजें नक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुठाम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुनद्र कैलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्वकाम कीजें गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ शत्रुंजयनां एकवीश नाम, जपेजे बेठा अपणे गाम ॥ शत्रुंज यात्रानुं फल लहे, महावीर नगवंत एम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ शत्रुंजो पहेले अरे, असी जोयण परिमाण ॥ पहोलो मूलें उंचपणे, बत्रीश जोयण जाण ॥ १ ॥ सीत्तेर जोयण जाणवो, बीजे आरे विशाल ॥ वीश जोयण उंचो कह्यो, मुऊ वंदन त्रण काल ॥ २ ॥ शाठ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जोयण त्रीजे अरे, पहोलो तीरथराय ॥ शोल योजन ऊंचो सही, ध्यान धरुं चित्त लाय ॥ ३ ॥ पच्चास जोयण पहोलपणे, चोथे अरे मझार ॥ ऊंचो दश जोयण अचल, नित्य प्रणमे नरनार ॥ ४ ॥ बार योजन पंचम अरे, मूल तणो विस्तार ॥ दोय जोयण ऊंचो कह्यो, शत्रुंज तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ छठे अरे, पहोलो पर्वत एह ॥ ऊंचो होशे सो धनुष, शाश्वतुं तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ जिनवरशुं मेरो मन लीनो ॥

॥ ए देशी ॥ राग आशावरी ॥

॥ केवलज्ञानी प्रथम तीर्थंकर, अनंत सिद्धा इण गाम रे ॥ अनंत वली सिद्धसे इण गामें, तिणें करुं नित्य प्रणाम रे ॥ १ ॥ शत्रुंजे साधु अनंता सिद्धा, सिद्धशे वलीयी अनंत रे ॥ जेणें शत्रुंज तीरथ नहिं नेट्यो, ते गर्भावास लहंत रे ॥ श० ॥ २ ॥ फागुण शुदि आठमने दिवसें, रुषभदेव सुखकार रे ॥ रायण रूंख समोसरया स्वामी, पूरत नवाणुं वार रे ॥ श० ॥ ३ ॥ भरत पुत्र चैत्री पूनम दिन, इण शत्रुंजे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गिरि आय रे ॥ पांच कोमिशुं पुंमरीक सिद्धा, तेणें पुंमरीक कहाय रे ॥ श० ॥ ४ ॥ नमी विनमि राजा विद्याधर, बे बे कोमी संघात रे ॥ फागुण शुदि दशमी दिन सिद्धा, तेणें प्रणमुं प्रजात रे ॥ श० ॥ ५ ॥ चैतर मास वदि चौदशने दिन, नमी पुत्री चोसठ रे ॥ अणसण करी शत्रुंज गिरि उपर, ए सहु सिद्धा एकठ रे ॥ श० ॥६॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्राविम ने वारिखिल्ल रे ॥ कार्त्तिक शुदि पुनम दिन सिद्धा, दश कोमी मुनि निःशल्य रे ॥ श० ॥ ७ ॥ पांचे पांमव इण गिरि सिद्धा, नव नारद ऋषिराय रे ॥ सांब प्रद्युम्न गया तिहां मुक्तें, आठे कर्म खपाय रे ॥ श० ॥ ८ ॥ नेम विना त्रेवीश तिर्थंकर, समोसरथा गिरिशृंग रे ॥ अजित शांति तीर्थंकर बेहु, रह्या चोमासुं रंग रे ॥ श० ॥ ॥ ए ॥ सहस्स साधु परिवार संघातें, थावच्चा सुत साधरे ॥ पांचशे साधुशुं शैलंग मुनिवर, शत्रुंजे शिवसुख लाध रे ॥ श० ॥ १० ॥ असंख्यांता मुनि शत्रुंजे सिद्धा, जरतेसरने पाट रे ॥ राम अने जरतादिक सिद्धा, मुक्ति तणी ए वाट रे ॥ श० ॥ ११ ॥ जाली म-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

याली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोमी रे ॥ साधुअनंता शत्रुंजे सिद्धा, प्रणमुं बे कर जोमी रे ॥श०॥१

॥ ढाल त्रीजी ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ शत्रुंजाना कहुं शोल उद्धार, ते सुणजो सहुको सुविचार ॥ सुणतां आनंद अंग न माय, जन्म जन्मनां पातक जाय ॥ १ ॥ ऋषजदेव अयोध्या पुरी, समोसरथा सामी हित करी ॥ जरत गयो वंदनने काज, ए उपदेश दीयो जिनराज ॥ २ ॥ जगमां महोटो अरिहंत देव, चोशठ इंद्र करे जसु सेव ॥ तेहथी महोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमे जिनवर राय ॥ ३ ॥ तेहथी महोटो संघवी कह्यो, जरत सुणीने मन गहगह्यो ॥ जरत कहे ते किम पामीयें, प्रजु कहे शत्रुंज यात्रा किये ॥ ४ ॥ जरत कहे संघवी पद मुज, ते आपो हुं अंगज तुज ॥ इंद्रें आएया अक्षत वास, प्रजु आपे संघवी पद तास ॥ ५ ॥ इंद्रें तेणी वेला तत्काल, जरत सुनद्रा बेहुने माल ॥ पहेरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ ऋषजदेवनी प्रतिमा वली, रत्न तणी कीधी मन रली ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नरतें गणधर घर तेमीया, शांतिक पुष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोतरी मूकी सहु देश, नरतें तेड्यो संघ अशेष ॥ आव्यो संघ अयोध्या, पुरी, प्रथम तीर्थ कर यात्रा करी ॥ ८ ॥ संघनक्ति कीधी अति घणी, संघ चलायो शत्रुंजय नणी ॥ गणधर बाहुबली केवली मुनिवर कोमी साथें लिया वली ॥ ए ॥ चक्रवर्त्तीनी सघली रुद्धि, नरतें साथें लीधी सिद्धि ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहेतां नावे पार ॥ १० ॥ नर तेश्वर संघवी कहेवाय, मार्गे चैत्य उद्धरतो जाय ॥ संघ आव्यो शत्रुंजय पास, सहूनी पूगी मननी आश ॥ ११ ॥ नयणें निरख्यो शत्रुंजो राय, मणी माणिक मोतीशुं वधाय ॥ तिणें ठामें रही महोत्सव कीयो, नरतें आणंदपुर वासीयो ॥ १२ ॥ संघ शत्रुंजय उपर चड्यो, फरसंतां पातक उमपड्यो ॥ केवलज्ञानी पगलां तिहां, प्रणम्यां रायण रूंख छे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेंद्रें आणी सुप-वित्त ॥ नदी शत्रुंजी सोहामणी, नरतें दीठी कौतुक नणी ॥ १४ ॥ गणधर देव तणे उपदेश, इंद्रें वल्ल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दीधो आदेश ॥ आदिनाथ तणो देहरो, भरतें कराव्यो गिरि सेहरो ॥ १५ ॥ सोनाना प्रासाद उत्तंग, रत्न-तणी प्रतिमा मनरंग ॥ भरतें श्रीआदीश्वर तणी, प्रतिमा स्थापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवीनी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरी प्रमुख प्रासाद, भरतें थाप्या नवले नाद ॥ १७ ॥ एम अनेक प्रतिमा प्रासाद, भरतें कराव्या गुरु प्रसाद ॥ एह भणयो पहेलो उद्धार, सघलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग आशावरी ॥

॥ भरत तणे पाट आठमे, दंमवीर्य थयो रायो जी भरत तणी परें संघ कीयो, शत्रुंजय संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ शत्रुंज उद्धार सांभलो, शोल महोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्याता बीजा वली, ते न कहुं अधिकारो जी ॥ श० ॥ २ ॥ चैत्य कराव्युं रूपा तणुं, सोनानां बिंब सारो जी ॥ मूलगां बिंब भंमारीयां, पश्चिम दिशि तेणी वारो जी ॥ श० ॥ ३ ॥ शत्रुं जनी यात्रा करी, सफल कियो अवतारो जी ॥ दंमवीर्य राजा तणो, ए बीजो उद्धारो जी ॥श०॥४॥ शो सागरोपम व्य-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तिक्रम्या, दंमवीरजथी जे वारो जी ॥ ईशानेंद्र करावीयो, ए त्रीजो उद्धारो जी ॥ श० ॥ ५ ॥ चोथा देव लोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारो जी ॥ तिणे शत्रुंजयनो करावीयो, ए चोथो उद्धारो जी ॥ श० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंद्र समकित धारो जी ॥ तिणें शत्रुंजयनो करावीयो, ए पांचमो उद्धारोजी श० ॥ ७ ॥ भवनपति इंद्र तणो कीयो. ए छठो उद्धारोजी ॥ चक्रवर्त्ति सगर तणो कियो, ए सातमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ८ ॥ अजितनंदन पासें सुएयो, शत्रुंजयनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरेंद्रें करावीयो, ए आठमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ए ॥ चंद्रप्रभ स्वामीनो पोतरो, चंद्रशेखरनाम मल्लारो जी ॥ चंद्रयशरायें करावियो, ए नवमो उद्धारो जी ॥ श० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणो देशना, शांतिनाथ सुत विचारोजी ॥ चक्रधर राय करावीयो, ए दशमो उद्धारो जी ॥ श० ॥ ११ ॥ दशरथ सुत जग दीपतो, मुनिसुव्रत सुवारो जी ॥ श्रीरामचंद्रें करावीयो, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥ श० ॥१२॥ पांमव कहे अमें पापीया, किम बुटुं मोरी मायो जी ॥ कहे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कुंती शत्रुंजा तणी, जात्रा कियां पाप जायो जी ॥ श० ॥ १३ ॥ पांचे पांरुव संघ करी, शत्रुंजय ज्नेव्यो अपारो जी ॥ काष्ठ चैत्य बिंब लेपनो, ए बारमो उद्धारो जी श० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाषाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीशत्रुंजनो संघ करी, थापी सकल सरूपो जी ॥ श० ॥ १५ ॥ अठोतर शो वरसां गयां, विक्रम नृपथी जिवारोजी ॥ पोरवारु जावरु करावियो, ए तेरमो उद्धारो जी ॥ श० ॥ १६ ॥ संवत बार तेरोत्तरें, श्रीमाली सुविचारो जी ॥ बाहरुदे मुहूर्त्तें करावीयो, ए चौदमो उद्धारो जी ॥ श० ॥ १७ ॥ संवत तेर एकोत्तरें, देश लहेर अधिकारो जी ॥ समरेशाहें करावीयो, ए पंदरमो उद्धारो जी ॥ श० ॥ १८ ॥ संवत पन्नर सत्याशी यें, वैशाकशुदि शुज्न वारो जी ॥ करमे दीशी करावियो, ए शोलमो उद्धारो जी ॥ श० ॥ १९ ॥ सांप्रतकाले शोलमो, ए वरते ठे उद्धारो जी ॥ नित्य नित्य कीजें वंदनाने, पामीजें ज्नवपारो जी ॥ श० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली शत्रुंज महातम कहुं, सांज्नलो जिम ते ठेम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ सूरि धनेसर इम कहे, महावीरे कह्युं एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, शत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो जेख मानतां, लाज होवे तहकीक ॥ २ ॥ श्री शत्रुंजा उपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परिमाण समुं लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ शत्रुंजा उपर देहरुं, नवुंनी पावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठगणुं फल होय ॥ ४ ॥ शिर उपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्तीनी स्त्री थइ, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनेम शत्रुंजें, चमीने करे उपवास ॥ नारकी शो-सागर तणो, करे कर्मनो नाश ॥ ६ ॥ काती परव महोटुं कह्युं, जिहां सिद्धा दश कोमि ॥ ब्रम्ह स्त्री बाल-कहत्या, पापथी नाखे ठोम ॥ ७ ॥ सहस्र लाख श्रावक जणी, जोजन पुण्य विशेष ॥ शत्रुंज साधु पमिलाजतां, अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ धन्य धन्य गज सुकुमारने ॥ ए देशी ॥

॥ शत्रुंजें गयां पाप बूटीयें, लीजें आलोयण एमो जी ॥ तप जप कीजें तिहां रही, तीर्थंकर कह्युं तेमो जी ॥ श० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

यण तासो जी ॥ चैत्रीदिन शत्रुंजय चमी, एक करे उपवासो जी ॥ श० ॥ २ ॥ रत्नतणी चोरी करी, सात आंबिल शुद्ध थाय जी ॥ काती सात दिन तप कीयां रत्नहरण पाप जाय जी ॥ श० ॥ ३ ॥ कांसा पीतल त्रांबां रजतनी, चोरी कीधी जेण जी ॥ सात दिवस पुरिमड्ढ करे, तो लूटे गिरि एण जी ॥ श० ॥ ४ ॥ मोती प्रवालां मुगीया, जेणें चोरयां नर नारो जी ॥ आबिल करी पुजा करे, त्रण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ ॥ श० ॥ ५ ॥ धान्य पाणी रस चोरीयां, जे नेटे सिद्ध खेत्रो जी ॥ शत्रुंज तलहटी साधुने, पखिलाने शुन्न चित्तो जी ॥ श० ॥ ६ ॥ वस्त्राभरण जेणें हरयां, ते लूटे इणे मेलो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, प्रह उठी बहु वहेलो जी ॥ श० ॥ ७ ॥ देवगुरुनुं धन जे हरे ते शुद्ध थाये एमो जी ॥ अधिकुं द्रव्य खरचे तिहां; पाले पोषे बहु प्रेमो जी ॥ श० ॥ ८ ॥ गाय नेंश गोधा महीं, गज ग्रह चोरणहारो जी ॥ लूटे ते तप तीरथें, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ श० ॥ ए ॥ पुस्तक देहरां पारकां, तिहां लखे आपणां नामो जी लूटे ॥ छमासी तप कीयां, उंमायिक तिण ठामो जी ॥ श० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजिका, सधव विधव गुरु नारो जी ॥ व्रत भांजे तेहने कह्युं, छमासी तप सारो जी ॥ श० ॥ ११ ॥ गो विप्र बालक ऋषि, एहनो घातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगें आलोचतां, छूटे तप करी एहो जी ॥ श० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ ढाल छठी ॥ ऋषभ प्रभुजीयें ॥ ए देशी ॥

॥ संप्रतिकालें शोलमो ए, ए वरते छे उद्धार ॥ शत्रुंजय यात्रा करुं ए सफल करुं अवतार ॥ श० ॥ १ ॥ छहरि पालतां चालीयें ए, शत्रुंज केरी वाट ॥ पाली तात्त पहोंचीयें ए, संघ मल्या बहु थाट ॥ श० ॥ २ ॥ ललित सरोवर देखीयें एवली सत्तानी वाव ॥ तिहां विशामो लीजियें ए, वमने चोतरे आव ॥ श० ॥ ३ ॥ पालीताणे पावनी ए, चढीयें उठी प्रजात ॥ शेत्रुंजी नदी सोहामणी ए, दूरथकी देखात ॥ श० ॥ ४ ॥ चढियें हिंगलाजने हडे ए, कलिकुंड नमीयें पास ॥ बारीमां हे पेशीयें ए, आणी अंग उल्लास ॥ श० ॥ ५ ॥ मरुदेवी टुक मनोहरु ए, गजचढी मरुदेवी माय ॥ शांतिनाथजिन शोलमो ए, प्रणमीजें तसु पाय ॥ श० ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वंश पोरवारें परगरो ए, सोमजी शाह मलार ॥ रूप जी शंघवी करावीयो ए, चोमुख मूल उद्धार ॥ श० ॥ ॥ ७ ॥ श्रीजिनराज सूरीश्वरू ए, खरतर गछ गणधार ॥ स्वहाथे जेणें प्रतिष्ठा करी ए, शुन्न दिवस शुन्न वार ॥ श०॥८॥चोमुख प्रतिमा चरचीयें ए, नमतीमांहे नलां बिंब ॥ पांचे पांरुव पूजीयें ए, अदबुद आदि प्रलंब ॥ श० ॥ ए ॥ खरतर वसही खांतशुं ए, बिंब जुहारुं अनेक ॥ नेमनाथ चोरी नमुं ए, टाबुं अलग उद्वेग ॥ श० ॥ १० ॥ धर्मद्वारमांहे नीसरुं ए, कुगति करुं अति दूर ॥ आवुं आदिनाथ देहरे ए, कर्मकरुं चक चूर ॥ श० ॥ ११ ॥ मूलनायक प्रणमुं मुदा ए, आदि नाथ नगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, नमतीमांहे नगवं त ॥ श० ॥ १२ ॥ शेत्रुंजा उपर कीजीयें ए, पांचे ठामें स्नात्र ॥ कलश अठोत्तरशो करी ए, निर्मल नीरशुंगा त्र ॥ श० ॥ १३ ॥ प्रथम आदीश्वर आगलें ए, पुंरुरीक गणधार ॥ रायण तल पगलां वलीए, शांतिनाथ सुख कार ॥ श० ॥ १४ ॥ रायणतले पगलां नमुं ए, चोमु ख प्रतिमा चार ॥ वीजी जुमें बिंब वली ए, पुंरुरीक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गणधार ॥ श० ॥ १५ ॥ सूरजकुंड निहालीयें ए, अति भली उलखाजोल ॥ चेलण तलाइ सिद्धशिला ए, अंगे करीशुं उछोल ॥ श० ॥ १६ ॥ आदिपुर पाजें उतरुंए, सीद्धवड लहुं विश्राम ॥ चैत्य प्रवाडी इणी परें करी ए, सीधां वांछित काम ॥ श० ॥ १७ ॥ जात्रा करी शत्रुंजा तणी ए, सफल कीयो अवतार ॥ कुशल केमशुं आवया ए, संघ सहु परिवार ॥ श० ॥ ॥ १८ ॥ शत्रुंजय महातम सांभली ए, रास रच्यो अनुसार ॥ जो भवि गावे भावशुं ए, आनंद होय अपार ॥ श० ॥ १९ ॥ शत्रुंजय रास सोहामणो ए, सांभलजो सहु कोय ॥ घर बेठां भणे भावशुं ए, तसु जात्रा फल होय ॥ श० ॥ २० ॥ भणशाली थिरु अतिभलो ए, दयावंत दातार ॥ शत्रुंजय संघ करावीयो ए, जेस लमेर मझार ॥ श० ॥ २१ ॥ शत्रुंजय माहात्म्य ग्रंथ थी ए, रास रच्यो अनुसार ॥ भाव भक्ते भणतां थकां ए, पामीजें भवपार ॥ श० ॥ २२ ॥ संवत शोल छया शीयें ए, श्रावणशुद्धि सूखकार ॥ रास भणयो शत्रुंजा तणो ए, नगर नागोर मझार ॥ श० ॥ २३ ॥ गिरुउ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गछ खरतर तणो ए, श्रीजिनचंद सूरीश ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना ए, सकलचंद सुजगीश ॥श०॥२४॥ तास शिष्य जग जाणीयें ए, समयसुंदर उवधाय ॥ रास रच्यो तेणें रूअडो ए, सूणतां आनंद थाय ॥ ॥ श० ॥ १५ ॥ इति श्रीं शत्रुंजयरासः संपूर्णः ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ शेत्रुंजो जोवानुं हो जोर छे जी ॥ राज जोर छे जी राज ॥ नाभीनो किशोर ॥ महाराजा ॥ शेत्रुंजो० ॥ ॥ १ ॥ सोरठ छेशनो साहेबोजी राज, शेत्रुंजानो शण गार ॥ महाराजा ॥ कलिमल करिकुल केशरीजी राज, मरुदेवी माता मल्हार ॥ महाराजा ॥ शेत्रुं० ॥श॥तीरथ तीरथ शुं करोजी राज, अवर छे आल पंपाल ॥ महाराजा ॥ त्रिभुवन तीरथ एक छे जी राज, श्रीसिद्धाचल सुविशाल ॥ महाराजा शेत्रुं० ॥ ३ ॥ भाग्य होय तो भेटीये जो राज, विमलाचल वारोवार ॥ महाराजा ॥ जेणें एक वार दीठो नहीं जी राज, अफल तेहनो अवतार ॥ महाराजा शेत्रुं० ॥ ४ ॥ सत्तर नेव्याशीया समेजी राज, जोर बनी उत्तंग ॥ महारा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जा ॥ प्रतिष्ठानपुरें पूज्या तणी जी राज, अधिक आंगीनो उमंग ॥ महाराजा ॥ शेत्रुं० ॥ ५ ॥ चैतर शुदि बारस दिनें जी राज, उदयरतन उवझाय ॥ महाराजा ॥ परिकरशुं प्रभु पेखीने जी राज, गेलेशुं गुण गाय ॥ महाराजा ॥ शेत्रुं ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ जे जे स्थानकें शाश्वत जिनालय छे ते ते स्थानकोनां नाम तथा त्यां जिनमंदिरनी संख्या अने प्रत्येक मंदिरमां प्रतिमाजीनी संख्या तथा एकत्र प्रतिमांजीनी संख्या, प्रतीमाजीना शरीरनुं प्रमाण, मंदिरनी लंबाइ तथा चोमाइ, अने उंचपणाना प्रमणानुं यंत्र लखीये. छैयें जेथी । वंदना करवाने अनुकूल थाय.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

| स्थानकनां नाम. | जिनमंदिर नी संख्या. | प्रत्येक प्रतिमा जी सं० | सर्व प्रतिमाजीना शरवालानी संख्या. |
|---|---|---|---|
| अनुत्तरमें. | ५ | १२० | ६०० |
| ग्रैवेयकमें. | ३१८ | १२० | ३८१६० |
| सौधर्मे. | ३२ लाख | १८० | ५७६००००० |
| ईशानदेव० | २८ लाख | १८० | ५०४००००० |
| सनत्कुमारे. | १२ लाख | १८० | २१६००००० |
| माहेंद्रमें. | ८ लाख | १८० | १४४००००० |
| ब्रह्मलोके. | ४ लाख | १८० | ७२००००० |
| लांतकमे. | ५० हजार | १८० | ९००००० |
| शुक्रदेव० | ४० हजार | १८० | ७२००००० |
| सहस्त्रारमे. | ६ हजार | १८० | १०८०००० |
| आनतमे. | २०० | १८० | ३६००० |
| प्राणतमे. | २०० | १८० | ३६००० |
| आरणमे. | १५० | १८० | २७००० |
| अच्युतमे. | १५० | १८० | २७००० |
| असुरकुमारे. | ६४ लाख | १८० | ११५२००००० |
| नागकुमारे. | ८४ लाख | १८० | १५१२००००० |
| सुवर्णकुमारे. | ७२ लाख | १८० | १२९६००००० |

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

| प्रतिमांजीनां शरीरप्रमाण | मंदिरनी लंबाइनुं प्रमाण. | मंदिरनी चोडाइनुं प्रमाण. | मंदिरनां उंचपणानुं प्रमाण. |
|---|---|---|---|
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५॥ | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष १॥। | योजन ५० | योजन २५ | योजन ३६ |
| धनुष १॥। | योजन २५ | योजन १२॥ | योजन १। |
| धनुष १॥। | योजन २५ | योजन १२॥ | योजन १८ |

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

| स्थानकनां नाम. | जिनमंदिर नी संख्या. | प्रत्येक प्रतिमा जी सं० | सर्व प्रतिमाजीनां शरवालानी संख्या. |
|---|---|---|---|
| विद्युत्कुमारे. | ७६ लाख | १७० | १३६७०००००० |
| अग्निकुमारे. | ७६ लाख | १७० | १३६७०००००० |
| द्वीपकुमारे. | ७६ लाख | १७० | १३६७०००००० |
| उदधिकुमारे. | ७६ लाख | १७० | १३६७०००००० |
| दिशिकुमारे. | ७६ लाख | १७० | १३६७०००००० |
| वायुकुमारे. | ९६ लाख | १७० | १७२७०००००० |
| स्तनितकुमारे | ४६ लाख | १७० | १३६७०००००० |
| जंबुवृक्षे. | ११७० | १२० | १४०४०० |
| कंचनगिरिये. | १००० | १२० | १२०००० |
| कुंडे. | ३७० | १२० | ४५६०० |
| दीर्घवैताढये. | १७० | १२० | २०४०० |
| महानदीये. | ७० | १२० | ८४०० |
| गजदंते. | २० | १२० | २४०० |
| नंदीश्वरद्वीपे. | ५२ | १२४ | ६४४८ |
| भद्रशालवने. | २० | १२० | २४०० |
| नंदनवने. | २० | १२० | २४०० |
| सौमनस्यवने. | २० | १२० | २४०० |

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

| प्रतिमांजोनां शरीरनुं प्रमाण. | मंदिरनी लंबाइनुं प्रमाण. | मंदिरनी चोराइनुं प्रमाण. | मंदिरनां उंचपणानुं प्रमाण. |
|---|---|---|---|
| धनुष १॥॥ | योजन ३५ | योजन १३॥ | योजन १८ |
| धनुष १॥॥ | योजन ३५ | योजन १३॥ | योजन १८ |
| धनुष १॥॥ | योजन ३५ | योजन १३॥ | योजन १८ |
| धनुष १॥॥ | योजन ३५ | योजन १३॥ | योजन १८ |
| धनुष १॥॥ | योजन ३५ | योजन १३॥ | योजन १८ |
| धनुष १॥॥ | योजन ३५ | योजन १३॥ | योजन १८ |
| धनुष १॥॥ | योजन ३५ | योजन १३॥ | योजन १८ |
| धनुष ५०० | गाउ १ | गाउ० ॥ | धनुष १४४० |
| धनुष ५०० | गाउ १ | गाउ० ॥ | धनुष १४४० |
| धनुष ५०० | गाउ १ | गाउ० ॥ | धनुष १४४० |
| धनुष ५०० | गाउ १ | गाउ० ॥ | धनुष १४४० |
| धनुष ५०० | गाउ १ | गाउ० ॥ | धनुष १४४० |
| धनुष ५०० | योजन ५० | योजन ३५ | योजन ३६ |
| धनुष ५०० | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष ५०० | योजन ५० | योजन ३५ | योजन ३६ |
| धनुष ५०० | योजन ५० | योजन ३५ | योजन ३६ |
| धनुष ५०० | योजन ५० | योजन ३५ | योजन ३६ |

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

| स्थानकनां नाम. | जिनमंदिर नी संख्या. | प्रत्येक प्रतिमा जी सं० | सर्व प्रतिमाजीनां शरवालानी संख्या. |
|---|---|---|---|
| पंमगवने. | २० | १२० | २४०० |
| वक्षस्कारायें. | ८० | १२० | ९६०० |
| कुलगिरिये. | ३० | १२० | ३६०० |
| दिग्गजे. | ४० | १२० | ४८०० |
| द्रहें. | ८० | २२० | ९६०० |
| यमकपर्वते. | २० | १२० | २४०० |
| वृत्तवैताढये. | २० | १२० | २४०० |
| राजधानीये. | १६ | १२० | १९२० |
| मेरुचूलिका. | ५ | १२० | ६०० |
| रुचके. | ४ | १२४ | ४९६ |
| कुंमलद्वीपे. | ४ | १२४ | ४९६ |
| इक्षुकारे. | ४ | १२० | ४८० |
| मानुष्योत्तरे. | ४ | १२० | ४८० |
| कुरुदसगे. | १० | १२० | १२०० |
| व्यंतरमां. | असंख्यात | १०० | असंख्याती. |
| ज्योतिष्के. | असंख्यात | १०० | असंख्याती. |
| ज्योतिष्करा | असंख्यात | १०० | असंख्याती. |

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

| प्रतिमांजोनां शरीरनुं प्रमाण. | मंदिरनी लंबाइनुं प्रमाण. | मंदिरनी चोमाइनुं प्रमाण. | मंदिरनां उंचपणानुं प्रमाण. |
|---|---|---|---|
| धनुष ५०० | योजन ५० | योजन २५ | योजन ३६ |
| धनुष ५०० | योजन ५० | योजन २५ | योजन ३६ |
| धनुष ५०० | योजन ५० | योजन २५ | योजन ३६ |
| धनुष ५०० | गाउ १ | गाउ० ॥ | धनुष १४४० |
| धनुष ५०० | गाउ १ | गाउ० ॥ | धनुष १४४० |
| धनुष ५०० | गाउ १ | गाउ० ॥ | धनुष १४४० |
| धनुष ५०० | गाउ १ | गाउ० ॥ | धनुष १४४० |
| धनुष ५०० | गाउ १ | गाउ० ॥ | धनुष १४४० |
| धनुष ५०० | गाउ १ | गाउ० ॥ | धनुष १४४० |
| धनुष ५०० | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष ५०० | योजन १०० | योजन ५० | योजन ७२ |
| धनुष ५०० | योजन ५० | योजन २५ | योजन ३६ |
| धनुष ५०० | योजन ५० | योजन २५ | योजन ३६ |
| धनुष ५०० | योजन ५० | योजन २५ | योजन ३६ |
| धनुष ५०० | योजन १२॥ | योजन ६। | योजन ए |
| धनुष ५०० | ० | ० | ० |
| धनुष ५०० | योजन १२॥ | योजन ६। | योजन ए |

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

## ॥ श्रीचोवीश जिननां एकशो ने वीश कल्याणिकनी तिथि प्रारंभः ॥

॥ तिहां प्रत्येक तीर्थंकरनां पांच कल्याणिक छे, ते एकेका कल्याणिकने दिवसे गणणुं गणाय छे. ते आवी रीते के, दिवसे श्रीतीर्थंकर परगतिथी च्यवीने माताना उदरने विषे आवे छे ते दिवसे च्यवन कल्याणिक कहेवाय छे. तेवारे "परमेष्ठिने नमः" एवो जाप जपाय छे. तथा जे दिवसे श्रीतीर्थंकरनुं जन्म थाय छे, ते दिवसे जन्मकल्याणिक कहेयाय छे, तेवारे " अर्हते नमः " एवो जाप जपाय छे. तथा जे दिवसे तीर्थंकर दीक्षा लइ मुनिपणुं धारण करे छे ते दिवसे दीक्षा कल्याणिक कहेवाय छे तेवारे " नाथाय नमः" ए जाप जपाय छे. तथा जे दिवसे श्रीतीर्थंकर भगवानने केवलज्ञान उत्पन्न थाय छे, ते दिवसे संपूर्ण ज्ञानकल्याणिक कहेवाय छे. तेवारे "सर्वज्ञाय नमः" ए जाप जपाय छे. तथा जे दिवसे श्रीतीर्थंकर भगवानने मोक्षनी प्राप्ति थाय छे, ते दिवासेनिर्वाणकल्याणिक कहेवाय छे तेवारे "पारंगताय नमः" ए जाप जपाय छे. ए रीते पांच कल्याणिक एके

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कातीर्थकरनां गणतां चोवीश जिननां एकशो ने वीश कल्याणिक थाय छे. तेनां दिवसोनुं यंत्र नीचें ठाप्युं छे.

तेनी समज आप्रमाणे छे के प्रथमनां कोठामां जे त्रण, बावीश, इत्यादिक जे आंकडा जरया छे ते जिहां त्रणनो आंक होय तिहां त्रीजा तीर्थकर श्रीसंभव नाथ समजवा. अने जिहां बावीशनो आंक होय तिहां बावीशमा तीर्थकर श्रीनेमिनाथ समजवा. ए रीते जिहां जे आंक होय तिहां तेटलामा तीर्थकरनुं नाम समजी लेवुं, तेवार पछी प्रत्येक महीनाना शुक्ल अथवा कृष्णपक्षमांहेला जे जे पक्षमां श्रीतीर्थंकरप रमात्माना जन्मादि कल्याणिक थयां छे, ते पक्ष जणा व्या छे. तेवार पछी पांच, बार, इत्यादिक जे आंक लखे ला छे ते वदि पांचम तथा बारस इत्यादिक तिथि सम जवी. तेवार पछी केवलज्ञान तथा च्यवन इत्यादिक जे लखेला छे ते सर्व प्रभुनां कल्याणिक समजवां तथा उपर जे कार्त्तिकवदि शुदि पक्ष एम करीने तेनी पासे जे सातमानो आंक लखेलो छे. ते कार्त्तिक महीनामां सर्व मली सात कल्याणिक थयां छे ए रीते बारे म हीनानी आगल जे आंक लख्या छे. ते सर्व आंक ते ते महीनाना कल्याणिकनी संख्याना समजवा.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ कार्त्तिकवदिशुदिपक्ष ।७।
३ वदि ५ केवलज्ञान ॥०
२२ वदि १२ च्यवन० ॥
६ वदि १२ जनम्या
६ वदि १३ दीक्षालीधी.
२४ वदि ३० मोक्षपाम्या.
९ शुदि ३ केवलज्ञान०
१८ शुदि १२ केवलज्ञान०
॥ मागशिरवदि शुदि ।१३।
९ वदि ५ जनम्या
९ वदि ६ दीक्षालीधी.
२४ वदि १० दीक्षालीधी
६ वदि ११ मोक्षपाम्या.
१८ शुदि १० जनम्या.
१८ शुदि १० मोक्षपाम्या.
१८ शुदि ११ दीक्षालीधी.
१९ शुदि ११ जनम्या.
१९ शुदि ११ दीक्षालीधी
१९ शुदि ११ केवलज्ञान०
२१ शुदि ११ केवलज्ञान०
३ शुदि १४ जनम्या.
३ शुदि १५ दीक्षालीधी.
॥ पौषवशुदिपक्ष ॥ १० ॥
२३ वदि १० जनम्या.
२३ वदि ११ दीक्षालीधी.
८ वदि १२ जनम्या.
८ वदि १३ दीक्षालीधी.
१० वदि १४ केवलज्ञान०
१३ शुदि ६ केवलज्ञान०
१६ शुदि ९ केवलज्ञान०
२ शुदि १ केवलज्ञान०
४ शुदि १ केवलज्ञान०
१५ शुदि १५ केवलज्ञान०
॥महावदिशुदिपक्ष ॥१४॥
६ वदि ६ च्यवन० ॥
१० वदि १२ जनम्मा.
१० वदि १२ दीक्षालीधी.
१ वदि १३ मोक्षपाम्मा.
११ वदि ३० केवलज्ञान०
४ शुदि २ जनम्या.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१२ शुदि २ केवलज्ञान०
१५ शुदि ३ जनम्या.
१३ शुदि ३ जनम्या.
१३ शुदि ४ दीक्षालीधी.
२ शुदि ८ जनम्या.
२ शुदि ९ दीक्षालीधी.
४ शुदि १२ दीक्षालीधी.
१५ शुदि १३ दीक्षालीधी.
फागुणवदिशुदिपक्ष ॥१५॥
७ वदि ६ केवलज्ञान०
७ वदि ७ मोक्षपाम्मा.
८ वदि ७ केवलज्ञान
९ वदि ९ च्यवन०॥
१ वदि ११ केवलज्ञान०
२० वदि १२ केवलज्ञान०
११ वदि १२ जनम्या.
११ वदि १३ दीक्षालीधी.
१२ वदि १४ जनम्या.
१२ वदि ३० दीक्षालीधी.
१८ शुदि २ च्यवन० ॥
१९ शुदि ४ च्यबन० ॥
३ शुदि ८ च्यवन० ॥
२० शुदि १२ दीक्षालीधी
१९ शुदि १२ मोक्षपाम्या.
॥ चैत्रवदिशुदिपक्ष ॥१३॥
२३ वदि ४ च्यवन ॥
२३ वदि ४ केवलज्ञान०
८ वदि ५ च्यवन० ॥
१ वदि ८ जनम्या.
१ वदि ८ दीक्षालीधी.
१७ शुदि ३ केवलज्ञान०
१४ शुदि ५ मोक्ष पाम्या.
२ शुदि ५ मोक्ष पाम्या.
३ शुदि ५ मोक्ष पाम्या.
५ शुदि ९ मोक्ष पाम्या.
५ शुदि ११ केवलज्ञान०
२४ शुदि १३ जनम्या.
६ शुदि १५ केवलज्ञान०
वैशाखवदिशुदिपक्ष ॥१७॥
१७ वदि १ मोक्ष पाम्या.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१० वदि २ मोक्षपाम्या.
१७ वदि ५ दीक्षालीधी.
१० वदि ६ च्यवन० ॥
२१ वदि १० मोक्षपाम्या
१४ वदि १३ जनम्या.
१४ वदि १४ दीक्षलीधी.
१४ वदि १४ केवलज्ञान०
१७ वदि १४ जनम्या.
४ शुदि ४ च्यवन० ॥
१५ शुदि ७ च्यवन० ॥
४ शुदि ८ मोक्षपाम्या.
५ शुदि ८ जनम्या.
५ शुदि ए दीक्षालीध.
२४ शुदि १० केवलज्ञान.
१३ शुदि १२ च्यवन० ॥
२ शूदि १३ च्यवन० ॥
॥ज्येष्ठवदिशुदिपक्ष ॥१०॥
११ वदि ६ च्यवन० ॥
२० वदि ८ जनम्या.
२० वदिए मोक्षपाम्या.
१६ वदि १३ जनम्या.
१६ वदि १३ मोक्षपाम्या.
१६ वदि १४ दीक्षालीधी.
१५ शूदि ५ मोक्ष पाम्या
१२ शूदि ए च्यवन० ॥
७ शूदि १२ जनम्या.
७ शुदि १३ दीक्षालीधी
आषाढ वदिशुदिपक्ष॥६॥
१ वदि ४ च्यवन० ॥
१३ वदि ७ मोक्ष पाम्या.
२१ वदि ए दीक्षालीधी.
२४ शुदि ६ च्यवन० ॥
२२ शुदि ८ मोक्ष पाम्या.
१२ शुदि १४ मोक्षपाम्या
॥श्रावणवदिशुदिपक्ष॥ए॥
११ वदि ३ मोक्ष पाम्या
१४ वदि ७ च्यवन० ॥
२१ वदि ८ जनम्या.
१७ वदि ए च्यवन० ॥
५ शूदि २ च्यवन० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

२२ शूदि ५ जनम्या.
२२ शुदि ६ दीक्षालीधी.
२३ शूदि ८ मोक्षपाम्या.
२० शूदि १५ च्यवन० ॥
॥नाद्रवावदिशूदिपक्ष ॥४॥
१६ वदि ७ च्यवन० ॥
८ वदि ७ मोक्षपाम्या.
७ वदि ८ च्यवन० ॥
ए शूदि ए मोक्षपाम्या.
॥आशोवदिशूदिपक्ष ॥२॥
२२ वदि ७ केवलज्ञान०
२१ शुदि १५ च्यवन० ॥

## ॥ अथ श्रीशत्रुंजयपद ॥

॥ दादा मोरा सासरीये वलाव्य, सासरीयां जाय ठे रे शेत्रुंजो नेटवा ॥ जाशे जाशे जेठाणीनी जोरु, देराणीयो जाशे रे डुरितने मेटवा ॥ १ ॥ धियरुी मारी शेत्रुंजो ठे दूर, सासरवासो रे नथी सज्यो वली ॥ कठण ठे आ उनालानो काल, लूनी लहेरे रे शरीर रहे बली ॥२॥ दादा मोरा पापी ने ठे दूर, सासरवासो रे मुने पहोतो सवे ॥ नले लह्यो उनालो ए वाट, नवमां नमतां रे जाणुं बुं बहु नवे ॥ ३ ॥ घेली बेटी घेलरुीयां श्यां बोल, देशावर जातां रे डुःख बहु देखवुं ॥ दादामोरा नजरे देखुं ए देश, तो डुःख सघलां रे सुख करी लेखवुं ॥ ४ ॥ डुर्गतिना पारु हो दांत, सुगति वसावुं रे सहेजे हाथमां ॥ जाशुं जाशु शेत्रुं-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जानी हो जात्र, समकितधारी रे मामीनी साथमां ॥ ५ ॥ दादा मोरा सहज वलावे लोक, मामीनो जा-यो रे साथे मोकलो ॥ अगाउ चलवो हो आज, ख-बर देवाने पंड्यो खोखलो ॥ ६ ॥ पुरुं मारा मनमा ना कोरु, हल हल करीने होंशे हालशुं ॥ लेवा लेवा मुगतिनी मोज, चोंप करीने रे पंथे चालशुं ॥७॥ एवो एवो करे छे आलोच, स्वमीनुं तेरुं रे आव्युं ते स मे ॥ वोलावी दीधी छे तेने वेग, शेत्रुंजे जइने रुष भने ते नमे ॥ ८ ॥ भांगी भांगी भवनी हो भूख, गिरिवरियो देखीने मनरुं गहगह्युं ॥ वुठा वुठा दुधडे हो मेह, हर्षने पुरे रे हैयरुं हसी रह्युं ॥९॥ जमरा तणुं तिहां नहीं हो जोर, जेणे प्रभु पुज्या रे फूले फुटरे ॥ शुं करे तेहने हो रोग, अमीरस पीधो रे जे नरे घु टडे ॥ १० ॥ देशमांहे छे शोरठ देश, तीरथमांहे रे शेत्रुंजो तेम लहो ॥ हारमांहे हो हारमां नगीनो जेम उदयरत्न कहे साचुं सद्दहो ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ पद ॥

॥ नाभिरायावंशे वारु उदयो दिणंद, देवनो मे देव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दीठो आदिजिणंद ॥ आदिजिणंद हांजी मरु देवीनो नंद ॥ ना० ॥ १ ॥ मीठो लागे महाराज रूप तोहरो आज, मुजरो जीयो माहारो सारोने काज ॥ दिवस घणे दीठो तुने नाथ मुने नेह, उपनो आनंद तेहनो कोण लहे छेह मी० ॥२॥ ताथेइ ताथेइ तान वाजे थीनगीन दों, मृदंग देव दुंदुजि ते वाजे दोंदों॥ उँउँ शंख वाजे तालकंसाल, धप मप मादल धमके रसाल ॥ मी० ॥ ३ ॥ दंकिटि दंकिटि थेइ थेइ थाप, पधनी धपमधप थइ अति व्याप ॥ घणणण घुघरा घमके रे पाय, जणणण जणकारा जेरीना थाय ॥ मी० ॥ ॥ ४ ॥ नाची कूदी पाय दंदी जविजन जावे, जगतिशु जगवंतने शीश नमावे ॥ मुगतिनी मोज आपो मागुं बे कर जोड, शत्रुंयरतन कहे जवदुःख छोरु ॥ मी० ॥ ५ ॥ इति श्री शत्रुंजयस्तवनं समाप्तम् ॥

इति श्रीशत्रुंजय महातीर्थना रासउद्धा-
रादिग्रंथोना संग्रहनुंपुस्तक समाप्त.॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

# श्रीआदीजिन विनंती.

मुण जीनवर सेत्रंजा धणीजी, दास तणीअर दास ॥ तुज आगल बालक परेजी, हुं तो करुं वेयासरे ॥ जीनजी मुख पापीने तार ॥ तुं तो करुणा रस भर्यो जी, तुं सहुनो हितकाररे जीनजी ॥ मुज० ॥१॥ हुं अवगुणनो ओरडोजी, गुण तो नही लवलेश ॥ परगुण पेखी नवी सकुंजी, केम संसार तरेसरे जीनजी ॥ मुज० ॥ २ ॥ जीवतणा वधमें कर्या जी, बोल्या मर्स्यावाद ॥ कपट करी परधन हर्या जी, सेव्या विषय संवादरे जीनजी ॥ मुज० ॥ ३ ॥ हुं लंपट हुं लालचुजी, कर्म कीधां केई क्रोड ॥ त्रण भुवनमां को नहीजी, जे आवे मुज जोडरे जीनजी ॥ मुज० ॥ ४ ॥ छीद्र परायां अहनीसे जी, जो तो रहुं जगनाथ ॥ कुगति तणी करणी करीजो, जोड्यो तेहसु साथरे जीनजी ॥ मुज० ॥ ५ ॥ कुमती कुटील कदाग्रही जी, वांकी-गति मति मुज ॥ वांकी करणी माहरीजी, शी संभलावुं तुजरे जीनजी ॥ मुज० ॥ ६ ॥ पुन्यविना मुज प्राणीओजी, जाणे मेलुंरे आय ॥ उचां तरुवर मोरीयाजी, त्यांही पसारे हाथरे जीनजी ॥ मुज० ॥७॥ वीण खाधावीण भोगव्याजी, फोगट कर्म बंधाय ॥ आर्तध्यान मीटे नहींजी, कीजे कवण उपायरे जीनजी ॥ मुज० ॥ ८ ॥ काजलथी पण सामलांजी, मारां मन परणाम ॥ सोणा मांही ताहरुंजो, संभारुं नही नामरे जीनजी ॥ मुज० ॥ ९ ॥ मुग्ध लोक ठगवा भणीजी, करुं अनेक प्रपंच ॥ कुड कपट हुं केळवीजी, पाप तणो करुं संचरे जीनजी ॥ मुज० ॥ १० ॥ मन चंचल न रहे कीमेजी, राचे रमणी रे रुप ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

काम विटंबण शीकहुंजी, पडीस हुं दुरगति कुपरे जीनजी ॥ मुज० ॥ ११ ॥ किश्या कहुं गुण माहराजी, किश्या कहुं अपवाद ॥ जेम संभारुं हैये जी, तेम तेम वाधे विखवादरे जीनजी ॥ मुज० ॥ १२ ॥ गिरुआ ते नवी लेखवे जी, निगुण सेवकनी वात ॥ निचतणे पण मंदिरे जी, चंद्र न टाले ज्योतरे जीनजी ॥ मुज० ॥ १३ ॥ निगुणो तोपण ताहरोजी, नाम धराव्युं दास ॥ कृपा करी संभारजोजी, पुरजो मुज मन आसरे जीनजी ॥ मुज० ॥ १४ ॥ पापी जांणी मुज भणीजी मतमुको वीसार ॥ विख हलाहल आदर्यो जी, ईश्वर न तजे तासरे जीनजी ॥ मुज० ॥ १५ उत्तम गुणकारी हुए जी, स्वार्थ वीना सुजाण ॥ करसण सिंचे सरभरेजी, मेह न मागे दाणरे जीनजी ॥ मुज० ॥ १६ ॥ तुं उपगारी गुण नीलोजी, तुं सेवक प्रतीपाल ॥ तुं समर्थ सुख पुरवाजी, कर महारी संभालरे जीनजी ॥ मुज० ॥ तुजने शुं कहीए घणुं जी, तुं सौ वाते जाण ॥ मुजने थाजो तुं साहीबाजी, भव भव ताहरी आणरे जीनजी ॥ मुज० ॥ १८ ॥ नाभीराया कुलचंद लोजी, मारुदेवीना नंद ॥ कहे जीन हरख निवाजज्योजी, देजो परमानंदरे जीनजी ॥ मुज० ॥ १९ ॥

Printed by Manakji Bhanji Dharamsey at **The New Laxmi Printing Press**, and Published by Heerji Ghellabhai Padamsi J. P. for Bhimsi Manek Trust 18–20 Kazi sayad street Mandvi **Bombay 3.**

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

## ॥ पद्यबंध चरित्रो ॥

| | |
|---|---|
| श्री समरादित्य केवलीनो रास | ५-०-० |
| श्री श्रीपाल राजानो रास अर्थ चित्रयुक्त | ४-०-० |
| सदर गुजराती | ३-८-० |
| श्रीचंद केवलीनो रास ( अति रसिक ग्रंथ ) | ३-०-० |
| श्री वीशस्थानकनो रास ( तप महात्य रुप ) | २-०-० |
| धर्म परिक्षानो रास | २-८-० |
| हित शिक्षानो रास | १-८-० |
| महाबल राजा अने मल्या सुदरी राणीनो रास | १-८-० |
| नर्मदा सुंदरीनो रास | १-०-० |
| महा प्रभाविक वीमल मंत्रीनो रास | १-०-० |
| मानतुग राजा अने मानवती राणीनो रास | १-०-० |
| वस्तुपाल तेजपालनो रास | ०-८-० |
| अभय कुमार[illegible] | ०-८-० |

उपर सिव[illegible] ग्रंथो, नकशाओ वगेरे मले छे. विगत [illegible]

Serving JinShasan
098193
gyanmandir@kobatirth.org

[illegible]सिंह माणेक.

जैन पुस्तक वेचनार तथा प्रसिद्ध करनार

शाकगली मांडवी मुंबई.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org